

संक्षिप्त जीवनी

श्री गुरु तेग बहादर जी

तिलक, जनेऊ के छाखे; हिन्द की चादर



लेखक: मुख्तार सिंह गुराया

ਪਿਤਾ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੀ ਬਹਾਦਰ ਬਾਰੇ

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ

ਹਰੀ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਤਿਨ ਕੇ ਸੁਤ ਵਏ॥ ਤਿਨ ਕੇ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਭਏ॥੧੨॥
ਤਿਲਕ ਜੰਝੂ ਰਾਖਾ ਪ੍ਰਭ ਤਾ ਕਾ॥ ਕੀਨੋ ਬਡੋ ਕਲੂ ਮਹਿ ਸਾਕਾ॥
ਸਾਧਨ ਹੇਤਿ ਇਤੀ ਜਿਨਿ ਕਰੀ॥ ਸੀਸੁ ਦੀਆ ਪਰ ਸੀ ਨ ਉਚਰੀ॥੧੩॥
ਧਰਮ ਹੇਤਿ ਸਾਕਾ ਜਿਨਿ ਕੀਆ॥ ਸੀਸੁ ਦੀਆ ਪਰ ਸਿਰਰੁ ਨ ਦੀਆ॥
ਨਾਟਕ ਚੇਟਕ ਕੀਏ ਕੁਕਾਜਾ॥ ਪ੍ਰਭ ਲੋਗਨ ਕਹ ਆਵਤ ਲਾਜਾ॥੧੪॥

ਦੋਹਰਾ

ਠੀਕਰਿ ਫੌਰਿ ਦਿਲੀਸ ਸਿਰਿ ਪ੍ਰਭ ਪੁਰ ਕੀਯਾ ਪਯਾਨ॥
ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਸੀ ਕ੍ਰਿਆ ਕਰੀ ਨ ਕਿਨਹੂੰ ਆਨ॥੧੫॥
ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਕੇ ਚਲਤ ਭਯੋ ਜਗਤ ਕੇ ਸੋਕ॥
ਹੈ ਹੈ ਹੈ ਸਭ ਜਗ ਭਯੋ ਜੈ ਜੈ ਜੈ ਸੁਰ ਲੋਕ॥੧੬॥

ਜਲਦੀ ਸੂਚਨਾ

1. The donations made to Pingalwara are exempted from income tax U/S 80-G of I.T. Act, 1961.
2. In the case of donations made in cash, such exemption would be available on Rs. 2000/- only.
1. ਪਿੰਗਲਵਾੜਾ ਸੰਸਥਾ ਕੀ ਭੇਜੇ ਹੂਏ ਦਾਨ ਪਰ ਇਨਕਮ ਟੈਕਸ ਆਕਟ, 1961 ਕੀ ਬਾਰਾ 80-ਜੀ ਕੇ ਅਧੀਨ ਟੈਕਸ ਮੇਂ ਛੂਟ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੈ।
2. ਨਕਦ ਦਿਏ ਦਾਨ ਪਰ ਯਹ ਛੂਟ ਲਿਫਟ 2000/-ਰੁ. ਤਕ ਹੀ ਮਿਲ ਸਕੇਗੀ।

संक्षिप्त जीवनी
श्री गुरु तेग बहादुर जी
तिलक, जनेऊ के राखे; हिन्द की चादर

लेखक: मुख्तार सिंह गुराया
अनुवादक : अनुपमा शर्मा



प्रकाशिका-डॉ. इन्द्रजीत कौर
प्रधान,
आल इण्डिया पिंजलवाड़ा चैरीटेबल सोसाइटी (रजि.)
तहसीलपुरा जी. टी. रोड, अमृतसर।

समर्पित

भाई जैता जी (बाबा जीवन सिंह),
भाई लक्खी शाह जी और साथियों
की व्यवस्था, और बहादुरी को ।

संक्षिप्त जीवनी

श्री गुरु तेग बहादुर जी

तिलक, जनेऊ के राखे, हिन्द की चादर

आ. मुस्तार सिंह गुराया

डी-577, रणजीत एवेन्यु

अमृतसर-143001

मो: 98551-22568

© लेखक

पहली छाप 5,000 जनवरी 2022

निःशुल्क

प्रकाशक :

डॉ. इंद्रजीत कौर,

प्रधान

आल इंडिया पिंगलवाड़ा चैरीटेबल सोसायटी (रजि:) अमृतसर।

फोन 0183-2584586, 2584713

Website: www.pingalwara.org

Email, pingalwara57@gmail.com

विषय सूची

प्रस्तावना

भूमिका

श्री गुरु तेग बहादुर जी

1. सामान्य जानकारी
2. जन्म और बचपन
3. विवाह और सन्तान
4. गुरुगद्दी की रस्म में रूकावटें
5. भाई मक्खन शाह का बकाले आना
6. संगतों का उमड़ पड़ना
7. माझे की यात्रा
8. गुरु तेग बहादुर जी से पूर्व सिक्खी का प्रचार
9. आनन्दपुर बसाना
10. औरंगजेब से मुलाकात
11. पूर्व की यात्रा
12. गोबिन्द राय के जन्म की खबर
13. असम की लड़ाई के लिए राजा राम सिंह का गुरु जी की शरण में आना
14. ढाका वापसी
15. पटना वापसी
16. आनन्दपुर वापसी
17. गुरु जी का आनन्दपुर में विचरना
18. मालवे की तीसरी यात्रा
19. देश की दशा
20. औरंगजेब के जुल्मों की इन्तहा
21. अंतिम प्रचार यात्रा, गिरफ्तारी और शहादत
22. गुरु जी की अजमत
23. शहादत की चित्प्रेषणता
24. शहादत के कारण
25. शहादत के प्रभाव
26. ज्ञानहीन और शरारत भरा प्रचार
27. गुरु जी के सम्पूर्ण जीवन पर एक दृष्टि
28. शहादत के प्रति इतिहासकारों के विचार
29. सहायक संदर्भ पुस्तकों की सूची
30. सिक्ख धर्म बारे महत्वपूर्ण जानकारी
31. अपील

प्रस्तावना

“बाबाणीया कहानीया पुत सपुत करेनि ॥” के मुख वाक्य को मुख्य रखते हुए, श्री गुरु तेग बहादुर जी की संक्षिप्त जीवनी स. मुख्तार सिंह जी ने प्रयत्न करके लिखी है।

अत्यंत सम्मान के पात्र मेरे नौवें गुरु ने चांदनी चौक दिल्ली में शहीदी देकर दुनिया में सिक्ख विचारधारा और नियमों को प्रकट किया है। उन्होंने दर्शाया है कि सिक्खी सिद्धांतों के अनुसार उस संरचनाकर्त्ता की रचना को कैसे प्यार किया जाता है अकाल पुरुष की रचना अद्भुत है उसने संसार के अलग-अलग क्षेत्रों में जीव पैदा किए। मनुष्य श्रेष्ठ जीव पैदा किया है। उसके मार्गदर्शन के लिए समय-समय पर कई अवतार भेजे, जिन्होंने अपनी सूझ के अनुसार लोगों को जीवन जीने की कला सिखाई, फिर दुनिया में ऐसे मनुष्य भी हुए जिन्होंने स्वार्थी सोच के साथ इन नियमों में गड़बड़ कर दी। मनुष्यता को बाँट दिया। कई बुराइयों ने जन्म लिया। इस तरह से दुनिया रूपी सुन्दर बाग में कई तरह के फूल खिले हुए हैं लालच और अहंकार के बस में होकर अलग-अलग समुदाय ने ताकत मिलते ही जोर-जुल्म शुरू कर दिया। उनको यह भ्रम हो गया, मेरे जीवन का रास्ता सही है और सबको वही ढंग अपनाने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया। गुरु साहिबान के अनुसार ये मानव अधिकारों पर उकैती थी। वह चाहते थे कि हर मनुष्य को अपनी सोच के अनुसार जीने की आजादी होनी चाहिए। प्यार, सोच विचार और कर्मों के साथ किसी भी इंसान को अपने साथ मिला सकते हो परन्तु जोर जुल्म के साथ नहीं।

औरंगजेब उस समय का शासक था। ताकत होने के कारण घमंडी था और कट्टर विचारों का था। उसने जोर जुल्म की उच्चतम हद कर दी थी, अपने ही परिवार के सदस्यों को मारकर

गद्दी हासिल की, कट्टर होने के कारण हिन्दुओं के मंदिर ध्वस्त कर दिए उनको नौकरियों से निकाल दिया। वह कश्मीरी पंडितों को इस्लाम कबूल करने के लिए मजबूर करता था। गुरु तेग बहादुर जी औरंगजेब के जुल्मों को बड़ी गम्भीरता के साथ ले रहे थे और जुल्म को रोकने की सोच रहे थे।

इस पुस्तक में स. मुस्तार सिंह प्रो. सतबीर सिंह की पुस्तक का संदर्भ देकर लिखते हैं जब कश्मीर के गवर्नर इफ्तिखार खान ने जुल्मों की चरम सीमा कर दी तो कुछ धर्मी और विद्वान ब्राह्मणों ने फैसला किया कि पंडित कृपा राम के नेतृत्व में सौलह बुद्धिजीवी अमरनाथ जाएं और शिवजी के आगे प्रार्थना करें। वहाँ अमरनाथ में ही पंडित कृपा राम को स्वप्न आया, गुरु नानक की गद्दी पर विराजमान गुरु तेग बहादुर जी के समक्ष ये मसला रखा जाए वह ही एक शस्त्रियत है जो इस मसले का हल कर सकते हैं।

पिछले साल मुझे कश्मीर में अनंतनाग के नजदीक मटन जाने का अवसर मिला, वहाँ जाकर पता चला कि पंडित ब्रह्मदास जी की गुरु नानक के साथ विचार गोष्ठी हुई। पंडित जी बहुत सारे ग्रंथ लेकर आए थे। वहाँ गुरु नानक देव जी ने ये शब्द उच्चारण किया था।

पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥

पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि गडीअहि खात ॥

पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ॥

पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥

नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥१॥

अंग ४६७

पंडित जी को गुरु नानक देव से ब्रह्म दृष्टि प्राप्त हुई। मुझे यह कड़ी जुड़ती नज़र आई क्योंकि पंडित कृपा राम जी पंडित ब्रह्म दास जी के पड़पौत्र थे। पंडित कृपा राम जी गुरु तेग बहादुर

जी के पास आए और तिलक जनेऊ बचाने के लिए निवेदन किया जो गुरु जी ने स्वीकार कर लिया और पंडित जी को कहा कि तुम गवर्नर इफ़्तखार खान को कह दो कि आप गुरु तेग बहादुर जी को मुसलमान बना लो तो हम सभी मुसलमान बन जाएंगे। इसके बाद गुरु जी स्वयं चल कर दिल्ली शहीद होने के लिए पहुँचे। गुरु साहिब ने मती दास, भाई सतीदास और भाई दयाला जी सहित शहीदियाँ दीं तब ही गुरु गोबिन्द सिंह जी ने उच्चारण किया:-

तिलक-जंझू राखा प्रभ ताका ॥

कीनो बडो कलू महि साका ॥.....गुरु गोबिन्द सिंह जी

यह बड़ी अद्भुत और विलक्षण शहीदी थी क्योंकि जिस धर्म के रीति-रिवाजों के आप धारण करने वाले न होते हुए भी आपको बचाने के लिए इतनी बड़ी कुर्बानी देना एक अचरज ही था।

इस पुस्तक में स. मुख्तार सिंह जी ने गुरु तेग बहादुर जी की शिक्षाओं का भी संक्षेप में वर्णन किया है। श्री गुरु तेग बहादुर जी ने जो शिक्षा भाई कन्हैया जी को दी वह मैं संगतों के साथ बाँटना चाहती हूँ।

“यह जो दात भरोसे की आप जी को मिली है, औरों को भी बाँटो। गुरु वस्तु विवेक है। विवेक सहित जो काम करने हैं, यही चरणों के पास रहना है। किसी को गुरमत की लगन लगाना, किसी का हृदय प्रसन्न करना, यही गुरु की सेवा है।”

श्री गुरु तेग बहादुर जी ने अपनी बाणी के द्वारा मानवता को जीने का ढंग सिखाया और जिंदगी की अमर वास्तविकता को बार-बार याद करवाया है। इस प्रथा में उनकी रचना से उच्चारण कुछ शब्द आप संगतों के साथ बाँट रही हूँ :-

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥

सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥१॥ रहाउ ॥

नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥

(7)

हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥१॥

आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥

काम क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रह्मु निवासा ॥२॥

गुर किरपा जिह नर कंउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥

नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥३॥११॥

अंग ६३३

इस शब्द के द्वारा उस अनन्त को मिलने का रास्ता दर्शाया है। इन्सान को भय-रहित जीवन निर्वाह करने के लिए उपदेश दिया है।

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥

कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥१६॥

जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥

कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु ॥१७॥

जिहि माइआ ममता तजी सब ते भइओ उदासु ॥

कहु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रह्म निवासु ॥१८॥

जिहि प्राणी हऊमै तजी करता रामु पछानि ॥

कहु नानक बहु मुकति नरु इह मन साची मानु ॥१९॥

अंग १४२६

जीवन की अस्थिरता के बारे ज्ञान :-

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥

जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥२५॥

प्राणी कछू न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥

कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फंघ ॥२६॥

अंग १४२६

मेरे पातशाह ने चाहे कर्तारपुर के मुंड में बहादुरी दिखाई, जिस करके उनका नाम तेग बहादुर पड़ा पर अंतर-आत्मा से वह अहिंसा में विश्वास रखते थे। उन्होंने राजा राम सिंह और

राजा चक्रध्वज जो युद्ध के लिए तैयार था, में सुलह करवाई और उपदेश दिया।

“ईर्ष्या के युद्धों में किसी को भी लाभ नहीं होता। लोगों का हृदय प्यार से जीतो। प्यार जोड़ता है, नफरत तोड़ती है। अपने झगड़े बैठकर सुलझा लो।”

इस शिक्षा की आज भी बहुत जरूरत है। ईर्ष्या के कारण ही हर धर्म के लोग कई-कई हिस्सों में बँटे हुए हैं। एक दूसरे पर कीचड़ फेंकते हैं। गुरु साहिबानों की शिक्षाओं से कोसों दूर हैं, भटके हुए हैं।

आशा करती हूँ कि इस वक्त गुरु तेग बहादुर जी के जीवन पर संक्षिप्त रूप में यह पुस्तक छाप कर पिंगलवाड़ा संस्था गुरु साहिब की शिक्षाओं की तरफ संगत का ध्यान दिलवाएगी, ताकि संसार में सुख-शांति और अमन हो। इसके लिए स. मुख्तार सिंह जी और उनकी टीम बधाई की पात्र हैं। संगतों का कोटि-कोटि धन्यवाद जो आर्थिक सहायता देकर संस्था को इस तरह की पुस्तक छापने के समर्थ बनाती है।

डॉ. इंद्रजीत कौर,
मुख्य सेवादार
पिंगलवाड़ा, अमृतसर।

भूमिका

अपने भाईयों का वध करके और अपने पिता को कैद करने के बाद, औरंगजेब 21 जुलाई, 1658 ई. को राजगद्दी पर बैठा। उसने मुल्ला और काजियों को अपने पक्ष में करने के लिए रिश्वत और अन्य लालच दिए, सूफी फकीरों को अपमानित किया, कैद किया और या फिर मार डाला। इस तरह उसने राजा के रूप में राज पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली।

उसने अब सभी ढंगों से हिन्दुओं, सिक्खों और अन्य गैर-मुस्लिमों को इस्लाम में बदलना शुरू कर दिया। इसके साथ ही उसके शैतानी दिमाग में विचार आया कि यह काम कश्मीरी ब्राह्मणों से शुरू किया जाए। इसका यह लाभ सोचा गया था कि अगर ब्राह्मण मुसलमान बन गए तो कमजोर जातियाँ स्वतः ही उनका अनुसरण करेंगी। दूसरा लाभ, मुसलमानों का दिमागी स्तर भी ऊँचा हो जाएगा।

श्री गुरु तेग बहादुर जी इस अत्याचारों से भरी कट्टरता को बड़ी गंभीरता से ले रहे थे। जब पंडित कृपा राम के नेतृत्व वाला प्रतिनिधि मंडल श्री अमरनाथ जी की यात्रा से आनन्दपुर साहिब आकर गुरु जी को मिला और पंडित कृपा राम ने बताया कि उक्त यात्रा के दौरान उन्होंने हमारी रक्षा के लिए शिव जी महाराज से प्रार्थना की थी। परन्तु वहाँ ही सोते हुए रात को स्वप्न में शिव जी ने उनको कहा है कि इस वक्त सारे हिन्दुस्तान में केवल गुरु तेग बहादुर जी ही ऐसे महापुरुष हैं, जो उनका संकट दूर करने में समर्थ हैं। उन्होंने गुरु जी के आगे निवेदन किया कि आप आत्म सम्मानित शूरवीर श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब के सुपुत्र हो। इस करके हमारी बाजू पकड़ने की कृपालता करें।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, गुरु जी औरंगजेब

के अमानुषिक अत्याचारों से पहले ही उपराम थे और ऊपर से पुत्र गोविन्द राय जी ने प्रतिनिधि मंडल का समर्थन किया था। पुत्र की सुहृदय सोच, बुद्धिमत्ता और परिपक्वता से गुरु जी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने एक दम सारी जिम्मेदारी अपने सिर पर लेने का मन बना लिया और पंडित कृपा राम के प्रतिनिधि मंडल को कह दिया कि प्रशासन के कानों में ये बात बता देना, “हमारे नेता गुरु तेग बहादुर हैं। अगर वे इस्लाम कबूल कर लें तो हम अपने आप ही ऐसा कर लेंगे।”

जब पंडित कृपा राम के प्रतिनिधि मंडल ने यह बात औरंगजेब तक पहुँचाई तो उसने, जो पहले ही गुरु जी को, उनके प्रचार के कारण, अपनी सरकार के लिए खतरनाक समझता था, उनकी गिरफ्तारी के हुक्म तुरंत जारी कर दिए।

जब गुरु जी को सरकार से आदेश मिले तो उन्होंने अपने साथियों सहित आगरा जाकर गिरफ्तारी दे दी।

आगरे से गुरु जी को, उनके पाँच साथियों सहित, दिल्ली ले जाया गया और चाँदनी चौक पर स्थित एक जगह पर बन्दी बनाकर रखा गया। भाई गुरदत्ता जी (अंश बाबा बुड्डा जी) और भाई ऊदा जी को उन्होंने, सारे हालात पर नज़र रखने के लिए, बाहर जाने के लिए कह दिया परन्तु भाई मती दास, भाई दयाल दास और भाई सती दास को अपने साथ ही गिरफ्तार करवा लिया। गुरु जी और उनके उक्त बताए सिक्ख सेवकों को पहले भूखे प्यासे रख कर घोर जुल्म किए गए और फिर 11 नवम्बर 1675 ई. को शहीद कर दिया गया।

इस पुस्तिका में, इन शहीदों की पूरी कहानी विस्तार में वर्णित है कि कैसे गुरु तेग बहादुर जी हिन्दू धर्म (तिलक, जनेऊ) जिसमें कि वह विश्वास भी नहीं रखते थे, की खातिर, अपने सिक्ख सेवकों सहित बलिदान दे दिया। ऐसा आज तक न कोई कर सका

है न ही भविष्य में कोई कर सकेगा। तभी तो श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने भी लिखा है :-

तेग बहादुर सी किरिया करी न किन्हूँ आनि।

मैं संस्था की संरक्षक प्रधान डॉ. इन्द्रजीत कौर जी का बहुत आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को लिखने के लिए मुझे प्रोत्साहित किया और इसके सारे मसौदे को पढ़ कर, प्रस्तावना को लिखने की कृपालता की।

सुगढ़ सेवादार जगप्रीत सिंह ने इस पुस्तक को लिखने में बहुत लगन से योगदान दिया है। कंप्यूटर ऑपरेटर सतनाम सिंह ने भी इस पुस्तक के मसौदे को अंतिम रूप देने के लिए कड़ी मेहनत की है। मैं इन दोनों का दिल से आभार व्यक्त करता हूँ।

स. बलकार सिंह, इंचार्ज, पूर्ण प्रिंटिंग प्रैस और उनकी टीम, खास करके पवन कुमार जी और जतिंदर-सिंह, जिन्होंने इस को छापने में खास दिलचस्पी से मेहनत की है, का बेहद शुक्रगुजार हूँ।

आ. मुस्तार सिंह गुराया

१६ सतिगुर प्रसादि । ।

श्री गुरु तेग बहादुर जी

1. सामान्य जानकारी :-

1. माता : श्रीमति नानकी जी ।
2. पिता : श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी ।
3. जन्म : 01-04-1621 ई.
(5 वैसाख, 1678 वि.)
4. जन्म-स्थान : गुरु के महल, श्री अमृतसर साहिब ।
(अब गु: गुरु के महल)
5. पत्नी : श्री गुजरी जी ।
6. सन्तान : श्री गोबिन्द राय जी
(श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी)
7. गुरबाणी रचना : 15 रागों में 59 शब्द और 57 श्लोक ।
8. गुरुगद्दी का आशीर्वाद: 11 अगस्त, 1664 ई. ।
9. ज्योति-ज्योत (शहादत) : 11-11-1675 ई.
(12 माघ, 1732 वि.) ।
10. कुल आयु : 54 वर्ष 7 माह 10 दिन ।
11. समकालीन शासक : औरंगजेब ।

2. जन्म और बचपन :- श्री गुरु तेग बहादुर जी का जन्म

1 अप्रैल, 1621 ई. को श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी के घर, माता नानकी जी के गर्भ से, गुरु के महल अमृतसर में हुआ । जब छठे पातशाह को खबर मिली, आप आसा की वार का कीर्तन सुन रहे थे । समाप्त होने के बाद, आप पाँच सिखों सहित नवजात शिशु को देखने आए और सिर झुका कर नमस्कार किया । जब बिधि चंद ने इसके बारे में पूछा तो गुरु जी ने उत्तर दिया कि एक दिन यह गुरु नानक साहिब की गद्दी का वारिस बनेगा । यह धर्म रक्षक और दीन दुनिया के संकट को दूर करने वाला होगा । यह बुराई का सामना

करेगा और हिन्दू धर्म की रक्षा करेगा और अत्याचारी तुर्कों को जड़ से उखाड़ फेंकेगा। गुरु नानक साहिब के आगे प्रार्थना भी की कि वह इस बालक को बुराई से लड़ने की शक्ति दें। नाम त्याग मल्ल रखा। गुरु हरगोबिन्द जी ने यह भी कहा कि इनके घर एक पुत्र जन्म लेगा जो देग, तेग का धनी होगा और गुरु नानक साहिब के घर का नाम चमकाएगा।

आप पाँच भाईयों और एक बहन में सबसे छोटे थे और गुरु से ही संत स्वभाव, विचारशील, निडर और उदार थे। वे बचपन में ही नाम सिमरन में लीन रहते और कई बार ध्यान में लीन हो जाते थे। दूसरे साहिबजादों बाबा गुरदित्त, सूरज मल्ल, अणी राय को जो बहुत काम करते थे, इतना प्यार नहीं मिलता था।

सन् 1631 ई. में छठे पातशाह जब बाबा बुढ़ा जी के बुलावे पर उनके अंतिम समय रामदास गए तो त्याग मल्ल और बाबा गुरदित्त जी भी साथ थे। बाबा जी के शांत चित्त स्वर्गवास का त्याग मल्ल जी पर गहरा प्रभाव पड़ा। इसके बाद करतारपुर से होते हुए बारठ साहिब बाबा श्री चन्द जी से मिलने गए तब भी बाबा गुरदित्त और त्याग मल्ल जी साथ ही थे। बाबा श्री चन्द के प्रति गुरु जी की सहनशीलता का त्यागमल्ल जी पर गहरा प्रभाव पड़ा।

इसके बाद जब 1634 ई. में करतारपुर वाली आखिरी और चौथी लड़ाई हुई तो त्याग मल्ल जी की उस वक्त आयु चाहे 13 साल ही थी पर आपने तलवार चलाने के पूरे जौहर दिखाए। इसके बाद गुरु जी और अन्य संगत करतारपुर से कीरतपुर जा रहे थे तो शाही सेना की एक टुकड़ी उनका पीछा करते हुए आ गई। यह हमला भी अचानक ही हुआ था। इस युद्ध में खास करके त्याग मल्ल जी ने तलवार के जो जौहर दिखाए, उसको देख कर ही गुरु हरगोबिन्द जी ने कहा था, “तू त्याग मल्ल नहीं, तेग बहादुर है।”

इसके बाद गुरु जी ने अपना पक्का निवास कीरतपुर ही रखा। वह वहाँ लगभग ग्यारह साल रहे। जब हरि राय जी को गुरु गद्दी की बख्शिाश की तो माता नानकी जी ने लिखा, “आप तो तेग बहादुर को गुरु नानक की गद्दी का वारिस कहते थे।” गुरु जी ने कहा समय आने पर सब कुछ होगा। उन्होंने माता जी को एक कटार, एक रूमाल और एक गुटका दिया और कहा, “आप अब बकाले चले जाओ” इस तरह, माता नानकी जी, गुजरी जी और तेग बहादुर जी, गुरु हरराय जी को माथा टेक कर बकाले आ गए। उनके नानी, नाना (माता हरदेई जी और पिता हरी चन्द जी) बकाले ही रहते थे। परन्तु माता नानकी जी, गुजरी जी और तेग बहादुर जी ने भाई मेहरा जी के घर निवास किया, जिन्होंने पहले गुरु हरगोबिन्द जी के चरण डलवाए और फिर रिहाइश की थी। गुरु हरगोबिन्द सिंह जी ने कहा था कि वह अपने अगले रूप में कई वर्षों तक वहाँ रहेंगे। माता गंगा जी भी उसी घर में ही ज्योति-ज्योत समाए थे। तेग बहादुर जी प्रातः उठकर कीर्तन करते और दिन में किरत कमाई करते रहते। बाकी सारा समय आप जी भजन बंदगी में लीन रहते और किसी को कम ही मिलते। भेंट भी स्वीकार न करते। अगर कोई दे जाता तो बाँट छोड़ते।

आप जी की शिक्षा और प्रशिक्षण गुरु पिता की देख रेख में हुआ था। धर्म ग्रंथों की शिक्षा के साथ-साथ आप जी को शस्त्र विद्या भी दी गई और घुड़सवारी भी सिखाई गई थी।

3. विवाह और संतान :- आप जी का विवाह करतारपुर (ज़िला जालन्धर) निवासी श्री लालचंद जी खत्री और श्री बिशन कौर जी की सुपुत्री श्री गुजरी जी के साथ 15 आश्विन, 1689 वि. को हुआ, जिनके गर्भ से 23 पूस, 1723 वि. (22-12-1666 ई.) को श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का जन्म हुआ।

4. गुरुगद्दी की रस्म में रूकावटें :- जब गुरु हरकृष्ण जी का शरीर चेचक के कारण बहुत कगजोर हो गया, यहाँ तक कि बेसुध की हालत में चला गया और उन्होंने पाँच दिनों बाद आँख खोली तो संगतों ने नारियल, पाँच पैसे और अन्य सामग्री मंगवा कर निवेदन किया कि गुरुगद्दी की जिम्मेदारी किसको देकर जा रहे हो गुरु जी ने अपने हाथ की उंगली को तीन बार घुमाया और कहा—‘बाबा बकाले’ इसके बाद उसी दिन (30 मार्च 1664 ई. को) ही ज्योति ज्योत समा गए। गुरु जी के आदेशानुसार यह सामग्री भाई दरगाह मल्ल जी को सौंप दी गई कि वह गुरुगद्दी देने के संबंध में आगे की कार्यवाही करें।

बकाला पहुँचने में भाई दरगाह मल्ल जी ने चार महीने से भी अधिक समय लगा दिया। उनका विचार था कि अधिक से अधिक संगतों का पता लग जाए तो उनके सामने गुरुगद्दी की रस्म पूरी की जाए। परन्तु, इस देरी का उल्टा असर यह हुआ कि जहाँ पहले बकाले में गुरु तेग बहादुर जी ही थे, वहाँ बहुत सारे सोढी, गुरुगद्दी मिलने की आशा में आकर इकट्ठे हुए, जिनमें सबसे आगे धीर मल्ल थे, जो करतारपुर (जालन्धर) से आए थे।

भाई दरगाह मल्ल जी कुछ अनुभवी सिखों सहित दिल्ली से चले तो उनके कुछ साथी कीरतपुर साहिब से भाई गुरदित्त (बाबा बुड्डा जी का पोता) को लेने चले गए।

बकाला में संगतें बहुत परेशान थीं। अलग-अलग दावेदारों के एजेंट/मसंद संगतों को धोखे से अपने वश में करके चढ़ावा आदि तो बटोर लेते परन्तु गुरु वाला धीरज, तृप्ति या प्रसन्नता देने के लिए कोई भी दावेदार समर्थ नहीं था।

गुरु तेग बहादुर आंतरिक प्रवृत्ति के होने के कारण आम करके चुप ही रहते। कई बार घोड़ी पर चढ़ कर बाहर चले जाते और जहाँ अब गुरुद्वारा आकीयाणा साहिब है, यहाँ आकर विराजमान होते। संगतें उनको भी एक आम सोढी जानकर, दूर से ही नमस्कार कर देती।

माता नानकी जी सारी स्थिति पर नज़र रख रहे थे और सम्भल-सम्भल कर चल रहे थे। वह बेटे गुरू तेग बहादुर को कहते रहते थे कि अपनी जिम्मेदारी संभाल लो क्योंकि उनको यकीन था कि गुरू हरगोबिन्द साहिब जी की बख्शाश पूरी होने का समय आ गया है। उधर, गुरू तेग बहादुर जी में गुरू वाले सारे गुण-सहज, वैराग्य, क्षमा आदि मौजूद थे। परन्तु गुरू जी ने चुप्पी धारण की हुई थी।

आखिर, माता नानकी जी ने अमृतसर से भाई गद्दीया जी (जिनका गुरू हरगोबिन्द जी की कृपा दृष्टि के कारण सिक्ख जगत में बहुत आदर था) को चिट्ठी भेज कर बुलाया और गोइन्दवाल साहिब से गुरू अमरदास जी के परिवार के मुखिया, विद्वान भाई द्वारका दास जी को भी बुलाया। पत्रों में माता जी ने लिखा था कि संगतों को भ्रमियों ने परेशान कर रखा है क्योंकि गुरूगद्दी के दावेदार और उनके मसन्द बावरे हुए फिरते हैं। हालत ये बनी हुई है जैसे माझी बगैर नौका या नेता बगैर सेना हो।

अंत में दिल्ली, कीरतपुर, अमृतसर और गोइन्दवाल से आए सारे भद्रपुरुष बकाला में इकट्ठे हो गए। बाबा सूरज मल्ल के पुत्र दीप चंद और नन्द चंद भी आ गए थे। माता जी के साथ सलाह करके सारे गुरू तेग बहादुर जी को मिले। भाई द्वारका दास जी ने हाथ जोड़ कर निवेदन किया, “आप गुरू हो, आपको छिपकर नहीं बैठना चाहिए, संगतें बहुत परेशान और व्याकुल हो रही है आदि।”

सारे प्रयत्नों के परिणामस्वरूप, 11 अगस्त 1664 ई. को बकाला में दीवान सजाया गया। भाइ गुरूदित्त जी ने गुरू तेग बहादुर जी के आगे पाँच पैसे, नारियल और अन्य सामग्री रखकर गुरूगद्दी का तिलक लगाया। संगतों ने खुशी के जयकारे लगाए और भेंटें प्रस्तुत कीं।

दीवान अब रोज लगाने लगा। कीर्तन के बाद गुरु जी कथा भी करते थे।

उधर धीरमल्ल ने सीधी विरोधता करनी शुरू कर दी थी।

5. भाई मक्खन शाह का बकाले आना :- भाई मक्खन शाह एक बहुत धैर्यवान सिक्ख थे और गुरु घर के प्रति अनन्य श्रद्धा रखते थे। वह एक बड़ा व्यापारी था और मुगल सेना को खाने-पीने की सामग्री पहुँचाने का काम करता था। एक बार सूरत की बंदरगाह के नजदीक उसका जहाज फंस गया, उसने गुरु नानक साहिब की गद्दी का ध्यान धारण करके प्रार्थना की तब जहाज किनारे लग गया। अब, उसने गुरु-घर में दसवंद भेंट करना था। वह पहले दिल्ली आया क्योंकि वह इतना ही जानता था कि गुरु नानक साहिब जी की गद्दी पर विराजमान श्री गुरु हरकृष्ण जी उन दिनों दिल्ली में निवास करते थे। परन्तु जब उसको दिल्ली से पता लगा कि श्री गुरु हरकृष्ण जी तो गुरुपुरी सिधार गए हैं जो अपने अंतिम समय 'बाबा बकाले' का संकेत कर गए थे जिसका भाव था कि उनके बाद गुरुगद्दी का हकदार बाबा, बकाले निवास करता है।

इसलिए भाई मक्खन शाह अपने दोनों बेटों, धर्म पत्नी और 500 कर्मियों, जिनमें से कुछ एक हथियारबंद भी थे, सहित 9 अक्टूबर 1664 ई. को बकाले आ पहुँचा। उसने अपना डेरा गांव से बाहर ही किया जहाँ अब गुरुद्वारा छावनी साहिब है।

गुरुगद्दी के शूठे दावेदारों ने अपने-अपने मसन्द भेजे। धीर मल्ल के मसन्द भी आए। जिन्होंने यह भी कहा कि क्योंकि धीर मल्ल के पास (गुरु) ग्रंथ साहिब भी है और वह गुरु हरराय जी का बड़ा भाई भी है, इसलिए गुरुगद्दी का वास्तविक हकदार वह ही है। मक्खन शाह ने सोचा कि गुरु तो रहमत करने वाला है, यह तो सारे भिखारी हैं। परन्तु फिर भी मक्खन शाह ने सारे सोढियों के

आगे दो-दो मोहरें रखी। जब धीरमल्ल जी के पास गए तो उसने मक्खन शाह को कीमती सिंरोपा दिया। उसका विचार था कि इस तरह बहुत भेंट मिलेगी। परन्तु मक्खन शाह ने उसके आगे भी दो मोहरे ही रखी। वह तो जहाज के बारे में कुछ सुनना चाहता था। इसलिए वह बहुत उदास हुआ। उसने किसी को पूछा कि कोई सोढ़ी रह तो नहीं गया। एक ने बताया कि गुरु तेग बहादुर जी रह गए हैं। मक्खन शाह बताए ठिकाने की ओर चल पड़ा। शोर सुनकर, गुरु तेग बहादुर जी ने एक सिक्ख को कह कर भेजा कि उसको कहो कि गुरु-घर में अदब के साथ आते हैं। संदेशा सुनकर वह अकेला ही आया और गुरु जी के आगे दो मोहरें ही रखकर माथा टेका। गुरु तेग बहादुर जी ने तुरन्त कहा, पूरी भेंट रखो। यह दो मोहरें ही क्यों? गुरु की भेंट देनी ही अच्छी होती है। साथ ही गुरु जी ने अपने कंधे का जख्म दिखाया, जो जहाज को कंधा देने के कारण हुआ था। दर्शन करके मक्खन शाह को अजीब किस्म का आनंद महसूस हुआ। वह गद्-गद् हो गया और कहने लगा, “आपने एक बार फिर मुझे डोलते, भटकते को बचा लिया है। वह इतना भावुक हो गया कि ऊँचे स्थान पर चढ़कर ऊँची-ऊँची पुकार उठा, “गुरु लाधो रे, सच्चा गुरु लाधो रे.....भूली संगतों आओ और सच्चे गुरु के दर्शन करो।”

रात हो जाने के कारण, वह सीधा अपने ठिकाने आया और गुरु जी का चोला, आदि (पूरी पोशाक) रातों-रात तैयार करवायी। उसको किसी ने बता भी दिया था कि गुरु जी का आदेश है कि जो प्रकट करेगा उसका मुँह काला होगा।

प्रातःकाल को पोशाक ली, भेंट भी साथ रखी और लंगर से कालिख लेकर मुँह पर लगा ली। परिवार और साथियों, संगतों सहित गुरु जी के ठिकाने हाज़िर हुआ। गुरु जी को पोशाक पहनाई। जब गुरु जी ने कहा कि तुम टले नहीं तो मक्खन शाह ने हाथ जोड़कर निवेदन किया कि सच्चे पातशाह। अगर आप छिपे

रहते तो संगतें भटकती रहनी थी, लालचियों की गिरफ्त में आ जानी थी और इधर-उधर भटकते फिरना था। अब कृपा करें और संगतों को जीवनदान दें।

कड़ाह प्रसाद करके, मक्खन शाह ने अरदास की और संगतों को संबोधन करके कहा “अब, और भटकने की जरूरत नहीं। सब भ्रम दूर हो गए हैं। हम सभी के अच्छे भाग्य हैं जो सच्चा गुरु मिल गया है। अब यहां से ही सबको योग्य नेतृत्व मिलेगा और मनोकामनाएं पूर्ण होगी।

परिणामस्वरूप, अगले दिन ही सारे लालची और भेष बदल कर बने गुरु अपने-अपने घरों को चले गए। परन्तु बदकिस्मती के साथ, धीरमल्ल और उसके साथी, ढीठों की तरह, दाँत चिढ़ा रहे थे। क्योंकि जितना चढ़ावा सच्चे गुरुघर पर एक दिन में ही चढ़ गया था, धीर मल्ल को तो बहुत देर से इतना नसीब न हुआ था। बदकिस्मती से उसके साथियों में सबसे बुरा और गुंडा प्रवृत्ति वाला सलाहकार शीहा मसन्द था जो धीर मल्ल के लिए कुछ भी करने को तैयार था। यहाँ तक कि उसने गुरु जी पर हथियारबंद हमला करने की केवल सलाह ही नहीं दी बल्कि इस उद्देश्य के लिए अपने आपको पेश भी किया। धीर मल्ल भी कहने लगा कि गुरु हरराय का बड़ा भाई होने के कारण गुरगद्दी के ऊपर सबसे अधिक उसका ही हक बनता है। परिणामस्वरूप जानलेवा हमला करने की सलाह बनाई गयी।

भाई मक्खन शाह अपने ठिकाने चला गया और गुरु जी भी घोड़ी पर चढ़कर कुछ समय के लिए बाहर चले गए। वापसी पर, जब बकाले की हद में दाखिल हुए तो गोलियों की बौछार शुरू हो गई। शोर सुनकर घोड़ी हिल गई और घर की तरफ दौड़ आई। सारे माहौल में ही भगदड़ मच गई।

शांत चित्त गुरु जी, “भले धीर मल्ल, भले...” पुकारते घर पहुँचे और आराम करने के लिए अपने घर की छत पर चढ़ गए।

शीहा मसन्द, जिसके साथ बहुत सारे और भी बंदूकधारी थे, ने इर्द-गिर्द के घरों में एक घर की माऊंटी पर चढ़कर निशाना बाँध कर गुरु जी पर गोली चला दी। गुरु जी ने अपना सीस हिला दिया था, जिसके कारण गोली मस्तक को छू कर निकल गई। मस्तक खून से लथपथ हो गया। उसने धीरमल्ल की छत के ऊपर आगे आकर कड़वे वचन भी बोले। उसके साथी सब भेंटें और अन्य मूल्यवान सामान लूटने लग पड़े।

यह देख, माता नानकी जी झट से आगे आकर कड़क कर बोली, “तू कौन है गुरु की शान में बुरे वचन बोलने वाला। करतारपुर से यहां आकर जो तुमने शोर मचाया और गुंडा गर्दी की है इस पर तुम्हें शर्म आनी चाहिए। अगर तुममें शक्ति थी तो तुम करतारपुर ही संगतों को अपनी ओर खींच लेते। तुम्हें ईर्ष्या की आग जला रही है। यह जो अत्याचार तुमने किया है, आप सब को जहर होकर मारेगा। गुरु घर नम्रता का घर है। अत्याचार करने वाले नष्ट हो जाएंगे।” माता जी ने गुरु जी के माथे और चेहरे से खून को साफ किया। परन्तु धन्य गुरु तेग बहादुर जी जो इस दशा में भी अडिग और शांत चित्त रहे। माता जी ने गरजती आवाज में टक्कर करने के लिए कहा कि जो लालच और अहंकार में बाजुओं के जोर के साथ उपद्रव मचाते हैं, उनको सुधारना ही बनता है। परन्तु गुरु महाराज ने कहा “जो अहंकार और लालच में आकर अत्याचार करते हैं, उनकी जड़, प्रभु आप ही उखेड़ देता है, पापी को मारने के लिए पाप ही महाबली होता है।

दूसरी तरफ, कुछ सिक्खों ने मक्खन शाह के डेरे जाकर सारा वृत्तांत सुनाया। मक्खन शाह ने कहा कि गुरु जी मान होते हुए भी निगमान हैं। हमारा फर्ज है कि अहंकारियों और दोषियों को दण्ड दें। सारा डेरा ही जल्दी-जल्दी गांव की ओर चल पड़ा। सुनते ही धीरमल्ल घबरा गया। मक्खन शाह के जवानों ने हल्ला बोल दिया और धीरमल्ल और उसके साथियों के सारे हथियारों

पर कब्जा कर लिया। शीहे मसन्द को पकड़ कर बांध लिया और धीरमल्ल को भी नंगे पाँव चलवा लिया। लूटा हुआ माल भी उसके साथियों के सिरों के ऊपर चुकवा लिया। (गुरु) ग्रंथ साहिब (आदि बीड़) को भी अदब के साथ, साथ ले लिया। जब सारे दोषी लूटे सामान सहित, गुरु जी के आगे पेश किए तो गुरु जी ने कहा कि इनको छोड़ दो और सारा माल, धन भी वापिस दे दो। इन्होंने लालच के अधीन सब कुछ बुरा ही किया है। मक्खन शाह न कहा, “हुजूर ! दोषियों को माफ करना नीति के विरुद्ध है।” गुरु जी ने कहा “क्रोध और बदले की भावना मनुष्य को दुःख ही देते हैं। क्षमा सबसे बड़ा पुण्य, दान, तप और सब तीर्थों के स्नान के समान हैं। क्षमा ही सबसे बड़ा धर्म है।”

मक्खन शाह ने सारा सामान वापिस कर दिया परन्तु आदि बीड़ न वापिस की। ज़लील होकर, धीरमल्ल रातों-रात करतारपुर चला गया। जब गुरु जी को पता लगा कि आदि बीड़ नहीं वापिस की तो उन्होंने आदेश दिया कि आदि बीड़ भी वापिस की जाए। परन्तु, धीर मल्ल का सामना करने से हर कोई कतराता था। इसलिए गुरु जी ने कहा कि आदि बीड़ किसी सुरक्षित स्थान (जहाँ अब गुरुद्वारा अमानतसर है) रखवाकर, धीरमल्ल को सदेशाभिजवा दो। धीरमल्ल आया और आदि बीड़ भी करतारपुर ले गया।

6. संगतों का उमड़ पड़ना :- लालची, दोषियों के खिसक जाने और सच्चे गुरु के प्रकट हो जाने के कारण, संगतों को जैसे-जैसे पता लगता बकाले की ओर संगतों की भीड़ चली आती और गुरु जी के दर्शन करके और उपदेश सुनकर भावविभोर होती।

7. माझे की यात्रा :- चाहे बाबा बकाला माझे के बीचोंबीच होने के कारण एक पक्ष से सही था परन्तु देश में अत्याचारी मुगल सरकार होने के कारण सुरक्षित नहीं था। इसलिए गुरु जी ने कीरतपुर साहिब के नज़दीक कोई सुरक्षित और मनमोहक स्थान ढूँढने का मन बनाया। साथ ही उन्होंने सोचा कि माझे और मालवे की यात्रा

करके, बाबा बकाला छोड़ कर नया ठिकाना बनाने की महत्ता के बारे में संगतों को बताया जाए। उन्होंने पहले माझे के गुरु स्थानों के दर्शन करने को मन बनाया। दीपावली बाबा बकाले मना कर, नवम्बर 1664 ई. का गुरु जी अमृतसर पहुँचे। दरबार साहिब का प्रबंध उत्त समय मेहरबान के पुत्र हरि जी के पास था। गुरु जी के आगमन के बारे में जानकर हरि जी ने दर्शनी डियोढी का दरवाजा बन्द करवा दिया। परन्तु गुरु जी को भ्रम में डालने के लिए स्वयं उनको चाबियाँ देने गया। हरि जी की दोहरी चाल देखकर गुरु जी अकाल तख्त साहिब के पास एक थड़े (अब गुरुद्वारा थड़ा साहिब) पर बैठ गए। गुरु जी ने सरोवर में स्नान किया और दीवान थड़ा साहिब लगाया। भाई मक्खन शाह गुरु जी के साथ ही थे, जिन्होंने हरि जी को भी धीरमल्ल की तरह सुधरने की सलाह दी परन्तु गुरु जी ने कहा कि इन मसंदों को सजा मिल ही रही है जो लोभ वश पूजा का मलीन धन खा रहे हैं और जिनमें जत, सत और ज्ञान जैसा कोई भी गुण नहीं है। संध्या के समय गुरु जी गांव वल्ला को चले गए और एक सिक्ख के घर रहे, वहाँ हरिछां नाम की एक स्त्री ने बहुत सेवा की। गुरु जी ने गांव को 'वल्ला, गुरु का गल्ला' होने का वर बख्शा। अमृतसर की संगतों को मसंदों की करतूत का जब पता चला तो गुरु जी स्नान करके बाहर से ही वल्ला चले गए हैं तो वे भी वल्ला गांव की ओर चल पड़े। स्त्रियाँ आगे-आगे थी। संगतों ने भूले बख्शाया। गुरु जी ने श्रद्धा से भरी स्त्रियों को वर दिया 'माईयां रब्ब रजाईयां, भक्ति लाईयां'। प्रातःकाल मसन्द पुजारी जी अपनी सफाई देने के लिए कि हम डर गए थे कहीं मुगल सरकार दरबार साहिब ही न नष्ट कर दें। गुरु जी ने सहज भाव से कहा कि आप में मसंदों वाली कोई बात नहीं है। पूजा का धान आपको ईर्ष्या और तृष्णा की आग में जला रहा है:-

नहि मसन्द तुम अमृतसरीये । तृष्णागन ते अन्तर सड़ीये ।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि गुरु जी ने अमृतसर वासियों के बारे में कुछ नहीं कहा। उन्होंने तो अत्यधिक उत्तेजना के समय भी क्षमा को महातप और समस्त तीर्थ स्थान कहा था।

तीन दिन वल्ले रहकर आप गुरु के बाग, तरन तारन, खडूर साहिब और गोइंदवाल होते हुए और गुरु घरों के दर्शन करते हुए सुल्तानपुर लोधी पहुँचे, जहाँ गुरु नानक साहिब ने मोदी खाना करते हुए लगभग 15 साल व्यतीत किए थे। सुल्तानपुर से आपने मालवे की यात्रा करने का मन बनाया।

आप जी से पहले माझे ने गुरु अंगद देव जी, गुरु अमरदास जी, गुरु रामदास जी, गुरु अर्जुन देव जी और गुरु हरगोबिन्द जी ने सिक्खी का बहुत प्रचार किया था। दुआबे में भी गुरु अर्जुन देव जी विचरन करते रहे थे परन्तु मालवे में सिक्खी का उतना प्रचार नहीं हुआ था। इसलिए गुरु तेग बहादुर जी ने मालवे में स्वयं जाकर प्रचार करने का मन बनाया। वह संगत में विचरते 'बै काहू कऊ देत नहि भै मानत आन।।' का उपदेश ही दृढ़ करवाते थे। उनके प्रचार के कारण ही लक्खी जंगल से खास करके, बहुत सारे जवान गुरु गोबिन्द सिंह जी के पास पहुँच कर अपनी सेवायें अर्पित करते रहे। ये बहुत आत्मसम्मानित और जुझारू सिक्ख थे। यही कारण है कि चमकौर की गढ़ी से श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी सीधे लक्खी जंगल ही आए थे और औरंगजेब को 'जफरनामा' भी यहीं से लिख कर भेजा था।

गुरु जी मालवे के प्रचार यात्रा पर तीन बार गए—एक बार दिसम्बर 1664 ई. से मई 1665 तक, दूसरी बार पूर्व ध्यान करते समय और तीसरी बार 1673 में करीब एक साल तक स्थान-स्थान पर जाकर प्रचार किया।

लक्खी जंगल के इलाके में प्रचार करके, गुरु जी संगतों सहित तलवंडी साबो पहुँचे। वहाँ केवल 9 दिन रहकर आप धरम के कोर्ट पहुँचे।

मालवे के इलाके में गुरु जी के पहली बार आने के कारण, कई लोग दुविधा में थे और गुरु जी का आरंभ में पूरा आदर नहीं करते थे। परन्तु बाद में गुरु जी की अज़मत के बारे में पता लगने पर अपनी भूलें बख्शाते और सिक्खी धारण करते थे।

इस तरह इलाके की संगतों में स्थान-स्थान पर प्रचार करते और संगतों का उद्धार करते हुए, गोबिन्दपुर पहुँचे। फिर धमतान गए वहाँ पर आप जी ने लव, कुश के तालाब के किनारे ही डेरा लगाया। कहते हैं कि यहां पर ही लव, कुश दोनों भाईयों ने अपने पिता राजा रामचन्द्र जी की फौज का मुकाबला किया था और उसको भगा देने की बहादुरी दिखाई थी।

गुरु जी ने संगतों को यह भी उपदेश दिया कि जब तक हम प्रभु को पिता समान नहीं जानते, वह हमारी प्रार्थना नहीं सुनेगा। वह 'सांझा पिता हमारा है' तो हम सारे एक दूसरे के भाई हैं। भाई-भाई की चीज चुराये—क्या यह शोभा देता है? प्रभु से कोई कुछ नहीं छिपा सकता, जो सदा व्याप्त है? लालच, ईर्ष्या और अत्याचार व्यक्ति का कुछ नहीं संवार सकते। किसी का कभी भी बुरा न करो। उसकी बख्शिा के काबिल होने का यह भी एक रास्ता है।

8. गुरु तेग बहादुर जी से पहले सिक्खी का प्रचार :-

(क) चार धूनियाँ :- जब से गुरु हरगोबिन्द जी ने बाबा गुरदित्त जी को, बाबा श्री चंद जी की सेवा के लिए, उनके पास रहने दिया था तो बाबा श्री चंद के अनुयायी सारे उदासी, गुरु घर के साथ जुड़ गए थे। बाबा श्री चंद के बाद बाबा गुरदित्त जी ने, गुरु हरगोबिन्द साहिब के नेतृत्व में, सिक्खी के प्रचार के लिए, चार धूनियाँ कायम की थी, जिनके मुखिया—बाबा अलम सत जी, बाबा बालू हसना जी, बाबा गोईदा जी और बाबा फूल जी को सुशोभित किया गया था। इन प्रमुखों को गुरु हरगोबिन्द जी ने कहा कि जिस निरंकार की महिमा गुरु नानक साहिब ने गाई है, उसको घर-घर

और स्थान-स्थान पर पहुँचाओ। जहाँ पर भी जाओ, संगत पर धर्मशाला कायम करो और गुरु स्थानों की सेवा सम्भाल का प्रबंध करते रहो।

(ख) बख्शिशों का वर्णन :- चार धूनियों के इलावा अलग-अलग गुरु साहिबान के समय छः बख्शिशें भी कायम की गई थी। जिनका नेतृत्व भाई भगत भगवान जी, भाई सुधरे शाह जी, भाई संगत साहिब जी, भाई मीहां साहिब जी, भाई बख्त मल्ल जी और भाई जीत मल्ल जी को दिया गया था। इनकी बख्शिशों ने सिक्खी का बहुत प्रचार किया। सारे हिन्दुस्तान में; अफगानिस्तान, कबुल, बहावलपुर और सिंध में

9. आनन्दपुर बसाना :- धमसान में वैसाखी के मेले के कारण गुरु जी खरक भूरा, खटकड़, घुडाम, लखनौर आदि गांवों में संगतों को कायम करते और लोक भलाई के कार्य करते हुए कीरतपुर पहुँचे। वहाँ उनके भाई बाबा सूरज मल्ल जी और उनके पुत्रों दीप चंद और नंद चंद जी ने बहुत आदर किया। उनके इर्द-गिर्द के सारे इलाकों का दूर दृष्टि के साथ सर्वेक्षण किया और आनन्दपुर वाले स्थान का चुनाव किया। यह दूर भी था, पहाड़ियाँ इर्द-गिर्द थी, खूबसूरत थी और रणनीति की तरफ से भी जीता न जा सकने वाला था।

मई 1665 ई. को राजा तारा चन्द का पुत्र दीप चन्द मृत्यु को प्राप्त हुआ। तारा चन्द उन 52 राजाओं में था जिनको हरगोबिन्द जी ने ग्वालियर के किले से रिहा करवाया था। दीप चन्द गुरु घर का बहुत श्रद्धालु था रानी ने सदिशा भेज कि राजा की अंतिम क्रिया में गुरु जी जरूर दर्शन दें। गुरु जी बिलासपुर पहुँचे। क्रिया की रस्म के बाद नौवें पातशाह ने कहलूर का क्षेत्र खरीदने की बात की तो रानी ने माखोवाल का क्षेत्र भेंट करना चाहा तो गुरु जी ने जोर डाल कर माखोवाल गांव का 500 रूपए

में पट्टा लिखवा लिया ताकि बाद में कोई झगड़ा न हो (दीप चन्द के पुत्र अजमेर चंद ने झगड़ा डाला भी था) गुरु जी ने 4 जून 1665 ई. को नगर की नींव बाबा गुरदित्त जी (बाबा बुड्डा जी का पोता) से रखवाई और नगर का नाम 'चक्क नानकी' रखा। जब गोबिन्द राय जी पटना साहिब से चक्क नानकी आए तो उन्होंने नगर में पैर डालने से पहले संगतों सहित आनन्द साहिब की पहली पाँच पउड़ियों का पाठ किया। बेटे की श्रद्धा और प्यार देखकर गुरु तेग बहादुर जी ने नगर का नाम भी आनन्दपुर रख दिया। संगतों के घरों के लिए स्थान नियत कर दिया और व्यापारियों के मंडी और बाजार के लिए भी स्थान निश्चित कर दिया।

कुछ प्रमुख सिक्खों को गुरु जी ने स्वयं मकान बनवा दिए। लंगर हर वन्त चलते रहते। भेंट बहुत आने लग पड़ी थी। गुरु जी जोड़ते नहीं थे। जो आता तीनों कामों पर खर्च करते-बेघरों को घर बना देते या लंगर में डाल देते और या नगर को सुन्दर बनाने में खर्च कर देते।

कीर्तन की ओर खास ध्यान देते। बढ़िया और प्रसिद्ध कीर्तनिये आप जी ने आनन्दपुर बुला लिए थे। पूर्व की ओर जाने के समय बढ़िया कीर्तन करने वाले साथ ही ले गए थे।

10. औरंगजेब से मुलाकात :- मालवा में रहते गुरु जी को डेढ़ महीना हुआ था कि 1 नवम्बर 1665 ई. को औरंगजेब का बुलावा आ गया। आप जी उस समय धनतान ही थे। हो सकता है गुरु विरोधी तत्वों, फाजियों, ब्राह्मणों आदि ने शिकायत की हो।

आप जी खटकड़, कैथल, जौद, धनेसर (सरस्वती किनारे) जा उतरे। रास्ते में एक स्त्री के घर गए और उस समय तैयार किया चोला पहना। उस समय आप जी के साथ भाई सती दास, भाई मती दास, भाई छोटे मल्ल, भाई संगतिया, भाई जेठा, भाई दयाल दास और अन्य बहुत सारी संगत भी चल पड़ी।

(27)

धनेसर से आप बनीबदरपुर, करनाल, पानीपत, सोनीपत होते हुए दिल्ली दाखिल हुए। उस वक्त आप जी के साथ कोई 30 हजार के करीब सिक्ख सेवक थे। मिर्जा राजा जय सिंह का पुत्र राम सिंह आप जी को आदर सहित अपनी हवेली ले गया। औरंगजेब के दरबार में गुरु जी के लिए चन्दन की चौकी ऊँची रखी गई। औरंगजेब ने बड़े आदर वाले शब्द इस्तेमाल किये लेकिन उसका मुख्य प्रश्न यह था कि करामात दिखाओ। गुरु जी ने कहा करामात दिखाना परमात्मा का शरीक बनने वाली बात है जो खुदा को नहीं अच्छा लगता। परमात्मा के प्यारों को बंदगी में जुटे रहना चाहिए।

फिर औरंगजेब को मुखातिब होकर कहा, अल्ला की बरकत से आप को राज्य भाग प्राप्त हुआ है और यह ही धर्म बनता है कि सब को एक आँख के साथ देखो। बादशाह गड़रिया और माली की तरह होता है, प्रजा बकरियां और बाग की भांति होती हैं। इनकी जितनी सम्भाल की जाए उतना ही लाभ होता है। बादशाह वृक्ष और प्रजा जड़ें होती हैं। जड़ें जितनी प्रफुल्लित होगी वृक्ष उतना ही हरा-भरा होगा। इस करके प्रजा को सुखी रखने में ही बादशाह का भला है। वैसे भी अल्ला को अत्याचार अच्छे नहीं लगते। फिर औरंगजेब ने गुरुगद्दी के झगड़े के बारे में पूछा तो गुरु जी ने कहा कि हमारा किसी के साथ कोई झगड़ा नहीं है। यह सुनकर औरंगजेब ने कहा कि गुरु तेग बहादुर एक फकीर के समान है।

11. पूर्व की यात्रा :- औरंगजेब से मुलाकात के बाद गुरु तेग बहादुर जी 17 दिसम्बर 1665 ई. को पूर्व की यात्रा पर चल पड़े। मथुरा, आगरा, कानपुर, गया आदि अलग-अलग स्थानों पर धर्म प्रचार करते हुए मई 1666 ई. को पटना साहिब पहुँचे। पटना का शासक उस समय रहीम बख्श था। पटना अशोक के समय से ही प्रसिद्ध हो गया था और नालंदा के नजदीक होने के कारण शिक्षा का केन्द्र बन गया था। पटना में गुरु जी ने पहले एक बाग

में चरण डाले। सूखा बाग हरा हो गया। जब रहीम बख्श दर्शनों के लिए आया तो गुरु जी ने पूछा कि यह बाग किसका है तब उसने कहा, “आप जी का।” तीन बार पूछने पर एक ही उत्तर मिला।

संगतों की लगातार वृद्धि के कारण गुरु जी ने हवेली वैसाखी राम में डेरा कर लिया था। मामा कृपाल चन्द, भाई संगतीया, भाई दयाल दास और कई प्रसिद्ध सिक्खों को जिम्मेदारी सौंपी। एक हुक्मनामे में आया, “जब तक हरिमंदिर न बने कबीले हमारे को एक बड़ी अब्बल हवेली में रखना।” पटना में टिक कर प्रचार (कथा, कीर्तन) करने के कारण संगतों और नवाब रहीम बख्श और इर्द-गिर्द के अन्य नवाबों ने भी गुरु जी की शस्त्रियत के समक्ष सिर झुकाया। सासाराम के नवाब ने 52 बीघे जमीन का पट्टा गुरु जी के नाम किया और पटना साहिब की चुंगी वसूलने की आज्ञा भी दी। गांव चूरीयां का सारा क्षेत्र गुरु जी के नाम लिख दिया। अक्टूबर 1666 में गुरु जी पटना से ढाका की ओर चल पड़े थे। गुरु नानक देव जी ने पहली उदासी के समय ढाका में संगत कायम की थी। गुरु अमरदास जी ने भी 22 प्रचार मंजियों में एक प्रचार मंजी यहां कायम की थी। गुरु हरगोबिंद जी के समय भाई अलमसत जी जहांगीराबाद (उस समय का ढाका नाम) को प्रचार केन्द्र बनाकर भाई नत्था जी को प्रचारक बना गए थे। गोबिन्द राय जी के लिए सोने की पालकी ढाका की संगतों ने ही पटना भेजी थी। गोबिन्द सिंह जी के समय आनन्दपुर के युद्धों के लिए युद्ध वाले हाथी और युद्ध का सामान भी पटना की संगत ही भेजती रही थी। संगतों का प्यार देखकर गुरु जी ने ढाका को ‘सिक्खी का कोठा’ कह कर नवाजा था। गुरु जी वहां मार्च 1667 को पहुँचे।

फिर गुरु जी कई स्थानों से होते हुए मालवा पहुँचे। वहां ढाका 250 मील था।



12. गोबिंद राय के जन्म की खबर :- ढाका में ही भाई मेहर चन्द और भाई कल्याण चन्द ने पटना से आकर गुरु जी को बधाई दी कि आप जी के घर 22 दिसम्बर 1666 ई. (पूस सुदी सातवीं 1723 वि.) को एक बहुत सुंदर बालक ने जन्म लिया है। गुरु जी ने झट से गोबिंद राय नाम रख दिया।

13. असम की लड़ाई के लिए राजा राम सिंह का गुरु जी की शरण में आना :- औरंगजेब को बंगला के वाक्या नवीसों ने लिख कर भेजा कि अहोमी गुवाहाटी की ओर बढ़ रहे हैं। फिरोजखान ने इनके साथ टक्कर ली थी परन्तु वह उनके हाथों मारा गया।

औरंगजेब ने राजा राम सिंह को 27 दिसम्बर 1666 ई. को असम की यात्रा पर जाने के लिए आदेश दिया। इसके दो कारण थे—एक तो वह इस बात से नाराज था कि राजा राम सिंह की हिरास्त में से शिवा जी कैसे भाग निकला ? दूसरा यह कि अगर राजा राम सिंह जीत गया तो अहोमी से पीछा छूट जाएगा और अगर मारा गया तो राजपुताना उसके हाथ आ जाएंगे। राम सिंह पर उसको अधिक विश्वास न था, इसलिए उसने अपने विशेष विश्वासपात्र साथ में भेजे। आदेश मिलते ही राजाराम सिंह ने पहले गुरु को ढाका में सदेशा भेजा और फिर आप जाकर मिला। इस यात्रा पर जाना एक मुश्किल कार्य था क्योंकि अहोमी बहुत लड़ाकू थे और दूसरे गुवाहाटी (असम) जादूगरों का इलाका था। इसी बात से डरता हुआ राजा राम सिंह गुरु जी को साथ ले जाना चाहता था।

गुरु जी ने राजा राम सिंह को हौसला दिया गुरु नानक साहिब अंग-संग हैं, डरने की जरूरत नहीं। जीत तुम्हारी ही होगी गुरु जी ने ब्रह्मपुत्र पार करके अपना डेरा धूबड़ी किया। राजा राम सिंह ने गुरु जी से चरण पाहुल भी ली। सेनाओं ने एक ऊँचा स्थान बना दिया। शाही लश्कर आया सुनकर, अहोमी राजा प्रण

पाल की सेनाएं भी आ गई और ब्रह्मपुत्र के दूसरे किनारे रुकी। गुरु जी के कहने पर राजा राम सिंह ने अपनी सेनाएं पीछे हटा ली परन्तु मुगल सेना पीछे न हटी। रात को ब्रह्मपुत्र बहुत सारी सेना बहाकर ले गया। इसलिए सारे गुरु जी की शरण में आ गए। गुरु जी ने कहा, "सतनाम का सिमरण करते रहो, डरने की जरूरत नहीं। आपका बाल भी बांका नहीं होगा।

इधर, अहोमी राजा के जादूगरों ने अपना पूरा जोर लगाया। परन्तु उनका कोई जोर न चला। फिर राजा चक्रध्वज ने कमाख्या देवी की पूजा की। कहते हैं कि राजा की माता को स्वप्न में देवी ने कहा कि गुरु तेग बहादुर जी की शरण में जाओ।

चक्रध्वज और उसकी माता गुरु दरबार हाजिर हुए। गुरु जी ने कहा कि आप दोनों क्षत्रिय भाई हो। आपका आपस में लड़ना शोभा नहीं देता। क्षत्रिय का धर्म है कि गरीबों की खातिर धर्म पुद्ध करे। आपकी लड़ाई का कोई तीसरा लाभ ले रहा है ईर्ष्या के गुह्रों में किसी को भी लाभ नहीं होता। लोगों का हृदय प्यार से जीतो। प्यार जोड़ता है, नफरत तोड़ती है। अपने झगड़े बैठकर सुलझा लो।

राजाओं की सुलह करायी। दोनों राजा धनिष्ठ भाई बन गए। गुरु जी ने अपने पवित्र हाथों में खंजर लेकर जोर से जमीन पर नारा और कहा कि एक भाग राजा चक्रध्वज का है और दूसरा भाग दिल्ली का। वह स्थान गुरुखंजरपुर के नाम से जाना जाता है। गुरु जी के हस्तक्षेप के कारण सदियों से चलती आ रही लड़ाई शांति में बदल गई।

फिर आप जी उस स्थान पर गए जहां गुरु नानक साहिब जी के चरण पड़े थे। सभी सैनिकों ने ढाल के साथ मिट्टी डाल कर थड़ा बनाया, जहां राजा चक्रध्वज ने बाद में गुरुद्वारा बनाया। गुरु जी स्वयं इसी स्थान पर कथा-कीर्तन करते रहे। यह स्थान तेग पर्वत के नाम के साथ प्रसिद्ध हुआ।

राजा चक्रध्वज को दरिया किनारे कुछ ब्राह्मण कुल्ला करते दिखाई दिए और उसने गुरु जी से पूछा कि ये इस तरह क्यों कर रहे हैं ? गुरु जी ने गुरु नानक साहिब जी का उच्चारण किया शब्द पढ़ा :-

नानक चुलीआ सुचीआ जे भरि जाणै कोइ ॥
 सुरते चुली गिआन की जोगी का जतु होइ ॥
 ब्रह्मण चुली संतोख की गिरही का सतु दानु ॥
 राजे चुली निआव की पड़िया सचु धियानु ॥

अंग १२४०

इस शब्द के द्वारा गुरु जी ने विद्वान, जोगी, ब्राह्मण, गृहस्थी और राजा के नैतिक गुणों और कर्तव्यों के बारे में प्रकाश डाला। साथ ही कुल्ला भर-भर कर फेंकने के जैसे कर्मकाण्डों का खण्डन भी किया है।

14. ढाका वापसी :- गुरु तेग बहादुर जी वहाँ से ढाका वापिस आ गए। असम और बंगाल में अनगिनत संगतें कायम की। लगभग यहाँ 2 साल प्रचार करने के बाद 1670 ई. की वैसाखी को गुरु जी कलकत्ते पहुँचे। फिर जगन्नाथपुरी में गुरु नानक साहिब जी के उपदेश दोहराए। उड़ीसा में आप जी को पता लगा कि औरंगजेब ने कट्टर नीति का एलान कर दिया है और अत्याचार आरम्भ हो गए हैं।

15. पटना वापसी :- इन हालातों के कारण वह पंजाब वापस आना चाहते थे। इस तरह वह पहले पटना साहिब पहुँचे। शहर निवासियों ने बहुत खुशी मनाई। आप जी ने गरीबों और जरूरतमंदों को खुले हाथों से दान दिए।

पटना में संगतों को संबोधन करते हुए सिक्खों/श्रद्धालुओं की ओर से पूछे प्रश्नों के उत्तर और उपदेश इस तरह दिए:-

(i) बड़ा आश्चर्य यह है कि मनुष्य, जो छोड़ता है, उसको अस्थिर

करके जानता है और सत्य को असत्य समझता है।

- (ii) कर्म के बस में होना ऐसा है, जैसे फूल खिल जाता है और उसके बीज धरती पर हवा के साथ दूर-दूर तक बिखर जाते हैं और कुछ समय बाद फूल, फल का रूप धारण कर लेते हैं। इसी तरह कर्म मरते नहीं। किसी न किसी रूप में रहते हैं जिस करके जीव मरता और जन्म लेता रहता है। हर जीव कर्म के वश में ही होता है। किसी के साथ ईर्ष्या और किसी के साथ प्यार कर्मों के कारण ही होता है।

अकाल पुरुष के हुक्म में रहना और खुश होकर जो हो रहा है उसे मानने के साथ सेवा के लिए उत्साह और उमंग पैदा होती है। सेवा करने के साथ अहंकार मरता है। अहंकार मरने के साथ कर्म मरते हैं।

- (iii) जाति-पाति का खंडन गुरु नानक सहिब जी ने ही जोरदार शब्दों में कर दिया था फिर भी एक ब्राह्मण की शंका दूर करते हुए गुरु जी ने कहा—वह सांझा पिता हमारा है, हम सभी उसकी संतान हैं और एक दूसरे के भाई हैं, कोई ऊँचा या नीचा नहीं है।

- (iv) दुःख-सुख परछाई की भाँति है। पिछले जन्म के या इस जन्म के कर्मों के अनुसार दुःख-सुख आते हैं। किसी मुश्किल से घबराना नहीं चाहिए, नीयत साफ करके नेक काम करते रहना चाहिए। उसके अनुसार ही दुःख के बाद सुख और कर्मों का फल जरूर प्राप्त होगा। अगर आज नुकसान हुआ है तो कल को लाभ भी मिलेगा। मालिक की शरण में रहकर भ्रम दूर होते हैं और आनन्द की प्राप्ति होती है।

- (v) अहंकार के कारण मरण-जन्म नहीं खत्म होता, गुरुबाणी का फरमान है :-

जब इह जानै मैं किछु करता ॥

तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥

16. आनन्दपुर वापसी:- पटना में लगभग तीन महीने प्रचार करके गुरु जी ने मई 1670 ई. को पहले अकेले ही आनन्दपुर जाने का फैसला लिया। वह हालात का जायजा लेने के बाद ही परिवार को पटना से ले जाना चाहते थे। परिवार को पटना ही रहने दिया। पटना से बनारस, अयोध्या, लखनऊ, शाहजहाँपुर, बरेली, पीलीभीत और नानकमता होते हुए मुरादाबाद पहुँचे। रास्ते में गुरु नानक देव जी के चरण स्पर्श किये हुए स्थानों की देख-भाल के लिए नये सिरे से प्रबंध भी किए। फिर जगाधरी, अंबाला के द्वारा 13 सितम्बर 1670 को लखनौर पहुँचे। (लखनऊ में जो माता गुजरी जी का कुआं है उसके जल के साथ ही दाल गलती है।)

लखनौर से करनाल जाते एक सज्जन ने राह रोक कर निवेदन किया कि वह बहुत दुःखी है। जमीन के बंटवारे के कारण किसी करीबी ने उसका छः वर्ष का पुत्र मार दिया है। उसको बदले की भावना बहुत दुःखी करती है। इतना कहते ही वह बेहोश हो गया। गुरु जी उसको पानी के छींटें मरवा कर होश में लाए और पूछा, “अब तुम क्या कहते हो?” उसका जवाब था, “खून के बदले खून।” यह कहकर वह फूट-फूट कर रोने लगा। दुःख तो तुम्हें बहुत है परन्तु बदले की भावना तुम्हें और दुःखी ही करेगी। जिन्दगी, मृत्यु परमात्मा के हाथ में है, बाकी तो बहाने ही बनते हैं। इन्साफ करना परमात्मा के हाथ में है। ईर्ष्या करनी हमेशा दुःखी करती है जब कि क्षमा आनन्द प्राप्त करती है। जैसे गुरवाणी का फरमान है—काम क्रोध काया कउ गालै। और निवणु सु अखरु खवणु गुणु।। इसलिए हुक्म मानना ही शोभा देता है और सुख का मार्ग है।”

इस बारे जब कातिल को पता लगा तो उसको पछतावा हुआ, उसने जा कर मकतूल के पिता से क्षमा मांगी। गुरु जी की मेहर के कारण कुछ समय पश्चात् मकतूल के माता-पिता के घर एक पुत्र ने जन्म लिया।

लखनौर से आप जी ने राजा राम सिंह की माता रानी गुष्ठा देवी को सदेशा भेजा कि वह (गुरु जी) उनको भाई कल्याण की धर्मशाला में मिलेंगे। 20 सितम्बर 1670 ई. को गुरु जी दिल्ली पहुँचे और रानी से वहाँ के हालातों के बारे में पूछा। रानी ने बताया, “बादशाह ने असम की यात्रा की सफलता से खुश होकर राजा राम सिंह को एक हजार सवार और दे दिए हैं, इत्यादि।” दिल्ली में गुरु जी पर सख्त पहरा रखा गया। यहाँ ही सैफ अली खान गुरु जी के दर्शनों को आए। जब आप आनन्दपुर गए तो साथ ही चले गए।

दिल्ली ही आप जी को पता लगा कि मथुरा में नर सिंह बंदेला ने जो आलीशान मंदिर 33 लाख रूपए की लागत के साथ बनवाया था उसको ध्वस्त कर दिया गया है और मथुरा का नाम इस्लामाबाद रख दिया गया है। दिल्ली से आप अक्टूबर 1670 ई. को नवाब सैफ अली के साथ ही, आनन्दपुर पहुँचे। कीरतपुर में आप जी के बड़े भाई सूरज मल्ल जी और उसके सुपुत्रों गुलाब राय जी और श्याम दास जी ने बहुत आदर दिया। आप जी ने दोनों भतीजों को मूल्यवान वस्त्र और आभूषण दिए और बहुत प्यार किया।

आनन्दपुर से पंजाब में पहले ही खबरें हो गई थी कि गुरु जी पटना आदि से आ रहे हैं। संगतों आदर सहित आगे जाकर लेने गईं, सारे आनन्दपुर साहिब में रोशनी की गई और विशेष रूप से लंगर लगाए गए। श्री अमृतसर से संगत भेंटें लेकर आईं। बाबा बुड्डा जी का पोता, बाबा गुरदित्त जी भी आए और एक बाज भेंट किया। आप यहाँ ही टिक गए और लंगर की सेवा सम्भाल ली। लाहौर, काबुल और मालवे की संगतें भी आईं। जिनमें मालवे के प्रसिद्ध सिक्ख भी शामिल थे। मालवे की संगत ने मालवे की यात्रा करने के लिए निवेदन भी किया।

भाई कन्हैया जी की गुरु तेग बहादुर जी की ओर से

परीक्षा :- भाई कन्हैया जी का जन्म गांव सोधरा में 1647 में हुआ। आप जी के पिता एक बड़े व्यापारी थे। भाई जी छोटे ही थे कि अपनी जेब पैसों के साथ भरी रखते थे और जरूरतमंदों में बांट देते थे। माता-पिता ने समझाना तो भाई जी ने माता को कहना कि घरों में बावले पुत्र भी होते ही हैं। मुझे बावला ही समझ लो। माता क्या जाने कि सृष्टि के मालिक, गुरु नानक साहिब को भी लोगों ने भूतना, बैताला, कुमार्गी आदि तक कह दिया था। जल्दी ही भाई जी के पिता की मृत्यु हो गई। अन्य भाई छोटे थे। पिता वाला धंधा सम्भालना पड़ा। पिता मुगल सरकार को राशन पहुँचाने का धंधा करते थे।

एक दिन भाई कन्हैया जी ने गुरु तेग बहादुर जी के सिक्ख से बाणी सुनी। तो ऐसी खींच पड़ी कि आप आनन्दपुर पहुँच गए। भाई जो को गुरु तेग बहादुर जी ने पानी का घड़ा लाने के लिए कहा, जब घड़ा आया तो गुरु जी ने हाथ धोकर बाकी पानी फेंक दिया। फिर और पानी का घड़ा लाने के लिए कहा। फिर घड़ा आया तो गुरु जी ने चरण धोकर बचा पानी फेंक दिया। फिर तीसरा घड़ा लाने के लिए कहा। जब लाया तो गुरु जी ने आँखों पर दो छींटें मार कर बचा पानी फेंक दिया। गुरु जी भाई के चेहरे की ओर लगातार देखते रहे। इस तरह तीन महीने होता रहा। यह कार्य मुश्किल जरूर था परन्तु भाई जी निभाते रहे। वह तो अनन्त की खोज में आए थे। एक बार जब भाई जी घड़ा भर कर लाए तो गुरु जी ने पास रख लिया और नजर भर कर भाई कन्हैया जी की ओर देखा तो उस समय भाई कन्हैया जी का शरीर शांत चित्त हो गया। सब में एक ही आत्मा है, की कलक गुरु जी ने दिखा दी।

भाई जी उस समय संगतों की सेवा करते रहे। एक दिन गुरु जी ने पास बिठाकर कहा, “यह जो बख्शीश भरोसे की आपको मिली है औरों को भी बांटों।” भाई जी ने निवेदन किया “कृपा

करके अपने चरणों के पास ही रखें ।” गुरु जी ने कहा, “गुरु वस्तु विवेक है। विवेक सहित जो काम करने हैं, यही चरणों के पास रहना है। किसी को गुरमत्त की लगन लगाना, किसी का हृदय प्रसन्न करना यह ही गुरु सेवा है।”

यह वचन सुनकर भाई जी वापिस अटक चले गए। प्रत्येक वर्ष दर्शनों को आते रहे। गुरु जी की शहीदी के बाद आप आनन्दपुर में ही आकर रहे। जल पिलाने की सेवा करते रहे। सन् 1704 में दसवें पातशाह के आनन्दपुर छोड़ने के बाद आप कवे चले गए।

भाई मनी सिंह :- भाई मनी सिंह जी (जन्म 1644 ई.) की सिकख इतिहास में एक अलग ही स्थान है। आप जी 29 मार्च, 1672 ई. को आनन्दपुर आए। भाई जी का गुरुघर के साथ संबंध 1657 ई में हुआ। उस समय उनकी आयु 13 वर्ष की थी। वह अपने पिता भाई माई दास के साथ ही गुरु हरराय जी के दर्शनों को कीर्तपुर आए थे। जब देशद्रोही भी मलेच्छों के साथ मिल गए, खालसे का बल छूट गया तो मलेच्छों ने अति कर दी तब आप गुरु हरकृष्ण जी के साथ ही दिल्ली गए। 15 वर्ष की आयु में आप जी का विवाह भाई लक्खी शाह की सुपुत्री सीतोबाई के साथ हुआ। 20 वर्ष की आयु में पहली बार वह 1664 ई. में गुरु तेग बहादुर जी के दर्शनों के लिए बाबे बकाले आए। फिर गुरु जी के आनन्दपुर आने पर यहां ही आकर बस गए। आप पोथियाँ लिखते, कथा करते और सेवा में लगे रहते।

गुरु तेग बहादुर जी की शहादत के बाद, आप जी गुरु गोबिंद सिंह जी की आज्ञा के अनुसार गुरु ग्रंथ साहिब की शुद्ध बीड़ों को तैयार करने में लग गए, गुरु ग्रंथ साहिब जी की सम्पूर्ण कथा भी गुरु जी ने आप जी को सुनाई। गुरु जी ने ज्ञानी की पदवी भी आप जी को दी। सिरसा से बिछुड़ने के समय आप माता सुन्दरी जी के साथ दिल्ली आ गए थे। बाबा बंदा सिंह जी की शहादत के

बाद, माता सुन्दरी जी ने आप को अमृतसर भेजा। यहां आप जी ने दरबार साहिब की मर्यादा बांधी। आप जी ने 90 वर्ष की आयु में शहादत प्राप्त की। आप जी ने भाई गुरदास जी की '11वीं वार' का टीका भी किया और जपुजी साहिब के भावार्थ भी लिखे। आप जी के 11 भाईयों में से 10 ने शहादत प्राप्त की और 10 पुत्रों में 7 ने भी शहादत प्राप्त की। इस तरह आप जी के परिवार का गुरु इतिहास में एक अलग ही स्थान है।

17. गुरु जी का आनन्दपुर में विचरन :- पटना से चल कर गुरु जी आनन्दपुर में अक्टूबर 1670 ई. को पहुँचे। गुरु जी के आनन्दपुर पहुँचने की खबर माझे, मालवे, दुआबे में, दूर-दूर तक फैल गई और संगतों जोश के साथ आनन्दपुर के दर्शनों को आने लगी परिणामस्वरूप, इस गहमा-गहमी ने आनन्दपुर को एक तीर्थ बना दिया। गुरु जी के दर्शन करके और सुध, शिक्षादायक विचार श्रवण करके गदगद होती। कुछ जिज्ञासु अपने संशय निवृत्त करने के लिए, गुरु जी के आगे अपने प्रश्न रखकर और उनके उत्तर पर शिक्षादायक विचार सुनकर तृप्त होते।

अलग-अलग समय पर गुरु जी की ओर से दी गई शिक्षाओं का संक्षिप्त वर्णन :-

- (1) भक्ति :- इस बारे गुरु जी का फरमान था कि प्रभु में समा जाना ही भक्ति है। जब मालिक के गुणगान करके अस्तित्व का भाव खत्म हो जाए और अमृत रस उत्पन्न होने लगे और आनन्द की प्राप्ति भी हो जाए, यही भक्ति का उद्देश्य है।
- (2) उत्तम कर्म :- एक प्रश्न के उत्तर में गुरु जी ने फरमाया कि वास्तविक जरूरतमंद की पहचान करना और ऐसे जरूरतमंदों में बाँट कर खाना उत्तम कर्म है। नाम जपना, शरीर आरोग्य रखना और अपना आप मिटा देना ही उत्तम कर्म है। इस प्रकार का रस प्रेमा भक्ति में से ही उत्पन्न होता है।

- (3) अकाल पुरुष की प्राप्ति का रास्ता :- इस बारे गुरु जी ने फरमाया कि भ्रम दूर करना, सिमरन में जुड़ना, विनम्र होकर अपना आम मिटा कर मालिक के आगे निवेदन करना ही प्रभु प्राप्ति का वास्तविक मार्ग है। जैसे :-

जन नानक मै नाहि कोऊ गुनु राखि लेहु सरनाई ।। 2 ।। 6 ।।

- (4) जीवन आदर्श :- नदियाँ, नाले जुड़कर दरिया बनता है। दरिया का पानी अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पहले रास्ते में लोकाई के कई कान संवारता है। परन्तु दरिया का आखिरी लक्ष्य समुद्र में समा जाना है। इसी तरह मनुष्य जीवन भी कर्मों के कारण प्राप्त होता है। आदर्श मनुष्य भी अपनी जिंदगी में कर्तव्यों से मुक्त होकर लोक भलाई के काम करते हुए जरूरत पड़ने पर बुराई के साथ ही टक्कर लेने में पीछे नहीं रहता दरिया की तरह मनुष्य का अंतिम लक्ष्य भी अपने जन्मदाता में समा जाना ही होना चाहिए। यही मनुष्य का जीवन आदर्श है। जो मनुष्य केवल अपने और अपने परिवार के लिए ही सारे कार्य करते हैं और लोगों की सुध लेने के लिए कदम नहीं उठाते, उनको अपने जीवन आदर्श से खोया हुआ समझना चाहिए।

- (5) तौहीद :- एक सूफी का भ्रम दूर करते हुए गुरु जी ने फरमाया कि एक परमात्मा के इलावा कोई और नहीं है। एक में विश्वास रखना और अन्य विस्तार को सच करके मानना तौहीद नहीं है। इसका सही अर्थ है कि जो दुनिया है, यह नाशवान है। इस वास्तविकता में विश्वास रखना ही तौहीद प्रस्त होना है। शरीर के साथ हित करने वाले को तौहीद प्रस्त कहना ठीक नहीं है। इसका बिल्कुल भी यह अर्थ नहीं कि शरीर को तंदरूस्त और चुस्त नहीं रखना।

- (6) अपना आप त्यागना :- गुरु जी ने बचपन में नियां मीर जी के कई बार दर्शन किए थे। एक बार उनका बड़ा शिष्य, मीरा शाह, गुरु जी के दर्शन करने के लिए आनन्दपुर आया। मन

की दशा बता कर कहने लगा; पछतावा भी करता हूँ परन्तु पापों की सजा से डर जाता हूँ।, संशय निवृत्त करते हुए गुरु जी ने फरमाया कि अगर सच्चे हृदय से तौबा की जाए तो पापों की सजा का डर रहता ही नहीं। वास्तविक तौबा अस्तित्व का ख्याल छोड़ना है। अस्तित्व के ख्याल से तृष्णा उठती है और भोगों के स्वाद उत्पन्न होते हैं। जो खुदा से तोड़ते हैं।

- (7) दुःखों का कारण :- नीरा शाह के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए गुरु जी ने फरमाया इच्छाएँ ही दुःखों का कारण है। जो आपके पास है उसके हाथ से निकल जाने का डर भी दुःख पैदा करता है। इच्छाओं और संशयों से मुक्त होना ही सुख का मार्ग है। विषय विकारों की ओर न भागो। दुनियावी इच्छाएँ और अल्लाह एक स्थान पर नहीं रह सकते।
- (8) मजहब :- जो राह खुदा की ओर ले जाए, वह ही वास्तविक मजहब है।
- (9) शराह :- जो बुराईयों से दूर करे, वह उत्तम शराह है।
- (10) खुदी (अहंकार) :- यह सभी बुराईयों की जड़ है। प्रेम की भट्टी में डालने से खुदी दूर हो जाती है।
- (11) जुहद (भक्ति) :- अगर कोई उस मालिक से अलग करता है, उसके साथ सभी संबंध तोड़ लेना ही जुहद है। बुरी संगति से किनारा करना, जुहद की मजिल की ओर बढ़ने के लिए पहला जरूरी कदम है।
- (12) फकर :- जीवन की वह दशा, जहाँ अपने आप का संपूर्ण अस्तित्व खत्म हो जाए, वह फकर है।

18. मालवे की तीसरी यात्रा (अक्तूबर 1673 से नवम्बर 1674 ई.) :- आनन्दपुर से अक्तूबर 1673 को आप मालवे की यात्रा पर चले गए। यह क्षेत्र सरवर का पुजारी था। इस यात्रा

के दौरान गुरु जी ने मालवे और बांगड़ इलाके के कई नगरों में चरण डाले। मालवे के प्रसिद्ध शहर-धर्मगढ़, मंडवाल, अलीमाजरा, पिलखणी, सिम्भडो, गुरूसर धारा साहिब, भागी भंडार, नीलक्खा, तिहालपुरा, दमदमा साहिब, बहादरगढ़, सुनाम, डब्बेवाल, अलीशेर खान, जोगा, भिक्खी, बच्चोआणा। संगरूर, बरनाला, भवानीगढ़, फगुवाला, कलालपुर, आकोई, हंडिआण, सेखा, सरदूलगढ़, कुब्बा, धूरी, बठिंडा, तपा मंडी, पातडां बांगड़ क्षेत्र में आप जी ने गढ़ी नजीर, घमतान, जींद, थानेसर, पिहोवा, कुरूक्षेत्र, खानपुर, करहा साहिब, बनीबदपुर, सूडल सुडैल, रूटोली आदि गांवों की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान संगतों को सखरियों के पीछे लगने से रोका और गुरमत्त को धारण करने की प्रेरणा दी। गुरु जी संगतों को निर्भय होने का उपदेश भी करते रहे।

19. देश की दशा :- गुरु जी को खबर मिली कि औरंगजेब 7 अप्रैल 1674 ई. को दिल्ली से चलकर हसन अबदाल (पंजा साहिब) पहुँच गया है, सरहद के राज्यों खटका और अफरीदीयां की बगावतों को दबाने के लिए स्वयं गया है। खटका के जरनैल खुशहाल खान ने कैद में से ही औरंगजेब को लिखा था, "नमाज और रोज़े ढोंग है, नीयत साफ नहीं। फरेब ही फरेब है। खुदा की बे-आवाज़ लाठी किसी का लिहाज़ नहीं करती और तेरा भी नहीं करेगी।"

मालवे की यात्रा करके गुरु जी नवम्बर 1674 ई. को जब आनन्दपुर पहुँचे तो देश की दशा सुनकर देख करके गुरु जी उपराम होकर कहा करते थे कि औरंगजेब की ओर से किए अत्याचारों के सम्मुख बड़ी कुर्बानी देनी पड़ेगी। जिसके साथ ज़ालिम सरकार का भद्दा अक्स लोगों तक पहुँचेगा।

20. औरंगजेब के जुल्मों की इंतहा :- अपने भाईयों को कत्ल करके और पिता को कैद में डालकर औरंगजेब 21 जुलाई 1658

ई. को तख्त पर बैठा था। छः, सात वर्षों में उसने अपनी हुकूमत मजबूत बना ली थी। अब उसने अपनी धार्मिक नीति बदली। सहनशीलता को छोड़कर उसने कट्टर धार्मिक नीति अपनाई। मौलवियों, काजियों को हाथ में लेने के लिए उसने रिश्वत और अन्य कई लालच दिए। भक्ति भाव वाले सूफियों, फकीरों को खत्म करना आरंभ कर दिया। इस सारे कुछ की मुस्लिम दुनिया ने बुरी तरह से निंदा की। यहां तक कि मक्के के मुफ्ती ने औरंगजेब की ओर से भेजी भेंट को लेने से इन्कार कर दिया था।

सर मुहम्मद इकबाल ने उसको इस्लाम के भूत का अंतिम तीर घोषित किया। समय के लेखकों, इतिहासकारों ने उसकी पुरजोर निंदा की है। क्योंकि वह अपना उद्देश्य सिद्ध करने के लिए झूठ बोलने को कुकर्म नहीं समझता था। वह फरेब के साथ अपने मुकाम को प्राप्त करने के लिए कोई भी बुरी चाल चल सकता था। यहाँ तक कि अपना उद्देश्य पूर्ण करने के लिए धोखा करने की हद तक जाता था जैसे कि :-

रामशाय ने चमत्कार दिखाए तो 7 गाँव उसको जागीर के तौर पर दे दिए। वह चमत्कार देखने का इतना शौकीन था कि 12 सय्यदों को इसलिए कारागार में डाल दिया कि या चमत्कार दिखाओ या मौत के घाट उतरो।

सरमद फकीर को मारा। गुजरात के शाहदौला जैसे बुजुर्ग को ज़लील किया। कई फकीरों को, पीर बुद्धू शाह सहित, किसी न किसी बहाने मार डाला।

अपने पिता को कारागार में डाला और सिड़की बन्द करवा दी जिसके द्वारा वह यमुना का नज़ारा करता था। पिता के हकीम को दवाई के बहाने जहर देने के लिए कहा परन्तु वह आप ज़हर पी गया परन्तु अपने पेशे को बदनाम न होने दिया।

बहन रोशन आरा को धीरे-धीरे असर करने वाला जहर दिया। भाईयों को बारी-बारी मारा; पहले दारा, फिर मुराद को

धोखे के साथ मदिरा पान करवा कर किले की दीवार से बाहर फेंकवा दिया। शुजाह को देश निकाला दिया। बड़े पुत्र शहजादा गुहम्मद को 36 वर्ष की आयु में जहर दे दिया ताकि वह राज्य का दावा न कर सके। शहजादा अकबर को देश निकाला दे दिया क्योंकि उसने एक पत्र में पिता को खरी-खोटी सुनाई थी। चौथे पुत्र मुअज्जम को, जो बाद में बहादुर शाह बना परिवार सहित सात वर्ष कैद में रखा।

इंतहा तब हुई जब अपनी ही ज़हीन, समझदार, शायरा (कवियत्री) बेटी, जेब-उल-निसा को जहर देकर मार दिया। अति निकटवर्ती मिर्जा राजा जै सिंह को ज़हर दे दिया।

कट्टर इतना था कि गुजरात का गवर्नर होने के समय 1645 ई. में मंदिर नष्ट करने की नीति अपनायी आरम्भ कर दी।

1674 ई. में औरंगजेब ने हिन्दुओं को इस्लाम के दायरे में लाना शुरू कर दिया। यह काम कश्मीर से आरम्भ किया।

हिन्दुओं के ऊपर इतनी कठोरता की गई, कि उनकी पाठशालाएँ और मंदिर नष्ट कर दिए। बनारस का प्रसिद्ध मंदिर 'विश्वनाथ' जिसको राजा नर सिंह देव ने 33 लाख रूपए की लागत से बनवाया था, नष्ट करवा दिया। कर्मचारियों को हिदायतें भेजी की निश्चित तिथि तक इस्लाम अपना लें नहीं तो नौकरी छोड़नी पड़ेगी। गवर्नरों और नवाबों को हिदायतें जारी की कि इस्लाम को फैलाने में पूरा जोर लगा दें। सैकड़ों ब्राह्मणों को बंदी बना कर जुल्म किए गए ताकि वह इस्लाम कबूल कर लें। हिन्दुओं के मंदिर और पाठशाला तथा सिक्खों के गुरुद्वारे नष्ट करके मस्जिदें बनाई गईं। दसबंध इकट्ठा करने वाले मसन्दों को शहर में से निकाल दिया। हिन्दुओं और सिक्खों पर मुसलमानों से अलग और कड़े टैक्स लगाए गए। सारे हिन्दोस्तान को इस्लाम में लाने के लिए एक अलग महकमा बनाया गया। जो मुसलमान बन जाते, उनको विशेष रियायतें दी जाती। पंजाब और कश्मीर में हाहाकार मच

गई। लोग इत धक्केशाही को 'ईश्वर की रजा' मान कर बर्दाश्त कर रहे थे और कहते थे: "दिल्लीशवरो वा ईश्वरोवा ।।" अर्थात्, दिल्ली का मालिक ईश्वर ही है, उसके आगे किसी का जोर नहीं चल सकता।

अन्य स्थानों की अपेक्षा कश्मीर पर बहुत सख्ती की गई और ब्राह्मणों को निशाना बनाया गया कि अगर ये मुसलमान बन गए तो नीची जातियों को अपने आप इस्लाम के घेरे में ले आएंगे और दूसरा लाभ ये होगा कि मुसलमानों का दिमागी स्तर उँचा हो जाएगा।

प्रो. सतबीर सिंह अपनी पुस्तक 'इति जिनि करी' के पं: 153 पर लिखते हैं कि पी. एन. बाज़मई ने अपनी पुस्तक 'हिस्टरी ऑफ कश्मीर' के पं: 544 पर लिखा है कि जब कश्मीर के गवर्नर इफ्तिखार खान ने जुल्मों की अति कर दी तब कुछ धर्मी ब्राह्मणों ने एक मीटिंग में फैसला किया कि पंडित किरपा राम के नेतृत्व में 16 बुद्धिजीवी पंडितों का प्रतिनिधि मंडल (वफ़द) श्री अमरनाथ की यात्रा पर जाए और शिव जी के आगे प्रार्थना करे। वहाँ अमरनाथ में ही, रात को पंडित किरपा राम को स्वप्न आया जिसमें शिव जी ने सलाह दी कि यह मसला श्री गुरु नानक देव जी की गद्दी के नौवें वारिस श्री गुरु तेग बहादुर जी के आगे रखा जाए। स्वप्न वाली सारी बात पंडित किरपा राम जी ने अपने साथी सदस्यों के साथ सांझी की, जिसके पश्चात् सारा प्रतिनिधिमंडल उनके नेतृत्व में तिथि 25 मई 1675 ई. को (जब गोबिंद राय जी की आयु केवल 8 वर्ष और 5 महीने की ही थी) आनन्दपुर साहिब पहुँच गया।

पंडित किरपा राम ने श्री अमरनाथ की यात्रा के बारे में सारी बात सुनाई कि स्वप्न में उनको शिव जी ने कहा है कि इस समय सारे हिन्दोस्तान में आप जी ही ऐसे महापुरुष हो जो हिन्दू धर्म के डूब रहे जहाज को किनारे पर ला सकते हो और इस धिनौने संकट से बचा सकते हो। आप श्री गुरु हरगोबिन्द जी के सुपुत्र

हो। उनको शाहजहां के राज्य में चार युद्ध करने पड़े। उन्होंने चारों ही जीत लिए भले ही उनकी सेना शाही सेना के मुकाबले बहुत कम होती थी क्योंकि वह स्वयं आगे होकर आत्मसम्मान के लिए जुझते थे। इसलिए अब आप भी हमारी बाँह पकड़ें। महाराज ने वख्शियों के दर पर आकर फरमाया, “बाँह जिनां दी पकड़ीए, सिर दीजै बाँह न छोड़िए इन ख्यालों की तरजुमानी भट्ट चौंद ने निम्नलिखित दोहे में खूब की है :- चित्त चरन कमल का आसरा, चित्त चरन कमल संग जोड़िए। मन लौचे बुरियाईयाँ, गुरू शब्दी इह मन होड़िए। बांह जिनां दी पकड़ीए, सिर दीजै बांह न छोड़िए। तेग बहादुर बोलया, धर पड़िए धरम न छोड़िए।

गुरू जी तो पहले ही, हो रही क्रूरता, जुल्म और अत्याचारों के सम्मुख, मन बना कर बैठे थे कि अब अपना शीश देकर ही मुगलों को शर्मिदा करना है और धर्म के सूख रहे वृक्ष को हरा-भरा रखने के लिए अपने खून के साथ सींचना है। इसलिए उन्होंने पंडित किरमा राम के प्रतिनिधिमंडल को कह दिया कि जाकर गवर्नर इफ्तिखार खान को बता दो कि गुरू तेग बहादुर हमारे मार्गदर्शक हैं। अगर उनको इस्लाम में ले आओ तो हम अपने आप ही उनके पीछे आ जाएंगे। जब गुरू पुत्र को गोबिंद राय जी ने भी ‘पिता गुरू तउ करो सहाय’ कह दिया तब गुरू जी ने प्यार से सीने के साथ लगा लिया और कहा कि जिसका तेरे जैसा समझदार और सूझवान पुत्र हो, उसको क्या परवाह है।

ब्राह्मण तसल्ली लेकर कश्मीर वापिस आए और सूबे के गवर्नर इफ्तिखार खान को लिखा कि गुरू तेग बहादुर हमारे मार्गदर्शक हैं। उनको पहले शरहा में ले आओ, हम अपने आप आ जाएंगे। इफ्तिखार खान ने इस तरह हसन अब्दाल (पंजा साहिब) जाकर औरंगजेब को बता दिया।

औरंगजेब पहले ही गुरू जी को हुक्मत के लिए खतरनाक

समझता था। उसने तुरन्त ही गिरफ्तारी के हुक्म जारी कर दिए। परन्तु आप वह 11 नवम्बर 1675 जिस दिन गुरु जी ने अपने तीन सिक्खों सेवकों (भाई मती राम, भाई सती दास और भाई दयाल दास) सहित, चांदनी चौक में शहादत का जाम पिया था, तक हसन अब्दाल ही था और दिसम्बर में दिल्ली में वापस आया था।

इधर गुरु साहिब ने गोबिंद राय जी को गुरुगद्दी की जिम्मेदारी 8 जुलाई, 1675 को सौंप दी।

गुरु तेग बहादुर जी का तिलक, जनेऊ की रक्षा के लिए कुर्बानी देने जाने के बारे में सुनकर संगतें आनन्दपुर की ओर इकट्ठी होकर चल पड़ी। गुरु जी पांच सिक्खों- भाई मती दास, भाई सती दास, भाई दयाल दास, भाई गुरदित्त जी (वंश बाबा बुड्डा जी) और भाई ऊदा जी को साथ लेकर चल पड़े। बाकी संगत को आप जी ने रेखा खींच कर कह दिया था कि इससे आगे कोई न आए। आनन्दपुर साहिब की रक्षा करो और गुरु गोबिंद सिंह जी की आज्ञा में रहो। आप की सेवा व्यर्थ नहीं जाएगी। फिर पुत्र गुरु गोबिंद सिंह जी को कसके आलिंगनबद्ध कर लिया, 'मैं शहीद होने के लिए जा रहा हूँ। जिसका तुम्हारे जैसा आज्ञाकारी और सूझवान पुत्र हो, उसको चिन्ता करने की जरूरत नहीं।'

जब माता नानकी जी को फिक्रमंद देखा तो, सारे परिवार का प्रेम तोड़ने के लिए जग रचना सब झूठ है जानि लेहु रे मीत।। आदि, श्लोक उच्चारण किए।

(पंडित किरपा राम मटन, कश्मीर के उस महान परन्तु अहंकारी विद्वान ब्रह्मदास का पड़पोता था जिसको श्री गुरु नानक देव जी ने ब्रह्म दृष्टि बख्शी थी-नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख।।

यही किरपा राम बाद में अमृत छककर किरपा सिंह बन गया था और चमकौर के युद्ध में झूझ कर शहीद हुआ था।

21. अंतिम प्रचार दौरा, गिरफ्तारी और शहादत :- गुरु जी को पता था कि उनको जल्दी ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा। इसलिए उन्होंने जुलाई 1675 ई. में पंजाब की तूफानी यात्रा आरम्भ की। प्रचार का सार यह था, "न किसी को डर दो, न किसी का डर मानो; न किसी पर जुल्म करो, न किसी का जुल्म बर्दाश्त करो।"

गुरु जी रोपड़ से होते हुए सैफाबाद (पटियाले के पास) पहुँचे। वहाँ सय्यद सैफ अली खान ने बड़ी सेवा की और दो महीने के करीब अपने पास ही रखा और सिक्खी धारण की। वहाँ चल कर आप समाणे और फिर गढ़ी नज़ीर (जिला : करनाल) पहुँचे वहाँ उस गाँव के संस्थापक सरदार भीखण शाह ने बहुत आदर किया और कई दिन अपने पास रखा और सिक्खी धारण की। गाँव चीका में अपने मसन्द भाई गलौरा को जुल्म का सामना करने के लिए प्रेरित किया और तीरों का तरकश दिया। गाँव खटकड़ में चोरों ने आप जी के घोड़े चोरी कर लिए पर जल्दी ही वापिस कर दिए और चोरी से तौबा करके सिक्खी धारण की। इस स्थान का पानी खारा था। गुरु जी ने वहाँ एक कुआँ लगवाने में मदद की, जिसका पानी मीठा निकला लोग बहुत खुश हुए और बहुत सारे सिक्ख बने।

फिर आप जीव आदि से होते हुए आगरे की ओर चले गए। पाँच सिक्ख-भाई दयाल दास, भाई नती दास, भाई सती दास, भाई ऊदा और भाई गुरदित्त अपने साथ रखें। बाकी सब को वापिस जाने के लिए कह दिया। स्थान-स्थान की संगतों का उद्धार करके गुरु जी आगरे पहुँच गए। पहले आप माई भागवती के घर ठहरे, फिर एक बाग में जा टिके और अपने वहाँ होने के बारे में हुकूमत को बताने का फैसला किया। एक बूढ़े गड़रिए को एक अंगूठी और मूल्यवान दुशाला देकर कहा कि अंगूठी के बदले मिठाई लेकर दुशाले के पल्लू से बांध लाए। हलवाई को मूल्यवान वस्तुएं देखकर

शंका हो गई और उस बूढ़े को कोतवाल के पास ले गया। कोतवाल ने किलेदार को खबर पहुँचाई। उसने गुरु जी को किले के अन्दर बन्द कर दिया और दिल्ली खबर भेज दी। वहाँ 1200 सवार आए और गुरु जी को भाई मती दास, भाई दयाल दास और भाई सती दास सहित दिल्ली ले गए और एक सुनसान हवेली में बंद करके सख्त पहरे लगा दिए। गुरु साहिब को पिंजरे में बंद करके खड़ा रखा गया और कई तरह के अत्याचार किए गए। जब दिल्ली के सिक्खों को इस बारे में पता लगा तो कुछ सम्मानीय सिक्ख काजी उल-कजात वहाब अली को मिले और उसको एक बड़ी रिश्वत के बदले छोड़ देने के लिए कहा। जब इस बात का पता गुरु जी को लगा तो उन्होंने बहुत गुस्सा किया।

भाई मती दास जी को शहीद करने की तैयारी की गई जिससे गुरु साहिब को डराया जा सके। भाई जी ने अपनी अंतिम इच्छा बताई कि आरे के साथ चीरते समय उनका मुँह गुरु जी की ओर हो तांकि वह अपना ध्यान गुरु जी के चरणों में टिका कर शहीदी प्राप्त कर सकें। ये अहलक्षारों के दिल की बात थी क्योंकि वह तो पहले ही चाहते हैं कि गुरु जी भाई मती दास को आरे के साथ चीरते हुए देखकर डर जाएंगे। ज्यों-ज्यों आरा चलता गया, भाई जी के चीरे जाने के बाद भी जब गुरु साहिब अडिग रहे तो भाई दयाल दास जी को देग में उबाला गया। उसके बाद भाई सती दास जी को रूई में लपेट कर आग लगा कर शहीद किया गया। गुरु जी ने यह शहीदियाँ अपनी आँखों के साथ देखी पर आप अपने उद्देश्य और आदर्श पर डटे रहे। उन्होंने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए बलिदान देने के लिए स्वयं ही तो गिरपतारी दी थी क्योंकि वह सच, धर्म और मानवता को प्यार करते थे।'

औरंगजेब तो दिसम्बर, 1675 तक बाहर ही रहा पर उसकी ओर से अंतिम आदेश आ गया था जो कि काजी की ओर से गुरु जी को पढ़ कर सुनाया गया :

- (i) या मुसलमान हो जाओ,
- (ii) या चमत्कार दिखाओ, और
- (iii) या फिर मरने के लिए तैयार हो जाओ गुरु जी ने पहली दोनों बातें ठुकरा दी और कह दिया : “आप जो चाहो करो, हम तैयार हैं।”

परिणामस्वरूप, गुरु जी को शहीद करने का फैसला किया गया। दिन और समय निश्चित किया गया। शहर में ढिंढोरा पीटा गया और निश्चित समय पर 11 नवम्बर, 1675 को पिंजरे से बाहर निकाल कर गुरु जी की इच्छा के अनुसार चांदनी चौक के साथ लगते कुएँ से स्नान कराया गया। गुरु जी ने बरामदे के नीचे चौकड़ी मार ली और कहा, “जब जपुजी का पाठ करके मैं अकाल पुरुष के आगे सिर झुकाऊँगा तो आप अपना काम कर लेना।” ऐसा ही हुआ, जब गुरु जी ने पाठ संपन्न करके धन्य वाहिगुरु कह कर सिर झुकाया तो समाणे वाले जल्लाद जलालदीन ने तलवार के साथ सीस धड़ से अलग कर दिया। (इस शहीदी स्थान पर अब गुरुद्वारा सीसगंज सुशोभित है)

एक तरफ तो सरकार अपनी योजनाएँ बना रही थी, दूसरी तरफ भाई ऊदा थे और भाई गुरदित्ता थे, वहाँ बस रहे सिक्खों, भाई ननूआ जी और भाई जैता जी के साथ, शहीदी के उपरान्त, गुरु तेग बहादुर जी की देह के सत्कार के लिए कुछ कर गुजरने की सलाह कर रहे थे। इसके इलावा, एक और सिक्ख भाई लक्खी शाह जो सरकारी ठेकेदार था, सरकार की योजनाओं से परिचित होकर बेचैन हो रहा था। उसने अपने साथियों, जिनका गुरुधर के साथ प्यार था, के साथ सलाह की कि जो भी हो वह गुरु जी के शरीर के सत्कार की रक्षा के लिए अपनी जान तक कुर्बान कर देगी। इस तरह एक तरफ हुकूमत, राजसत्ता के नशे में चुर हुई, गुरु साहिब की शहीदी के बाद, उनके शरीर का अपमान करने और दहशत फैलाने के लिए योजनाएँ बनाई बैठी थी, और दूसरी

तरफ सिक्ख सतगुरूओं के चरणों में अरदास करके उनके शरीर के सत्कार की रक्षा के लिए दृढ़ता के साथ कमर कसाकर तैयार बैठे थे। भाई जैता जी ने अपने पिता भाई आज्ञा राम जी के साथ सलाह की कि महाराज के सीस की बेअदबी नहीं होने देनी और धड़ भी हर सूरत उठाना है।

भाई जैता जी की योजना थी कि सीस के स्थान पर सीस रख दिया जाए तो जो कुछ समय भ्रम पड़ा रहे और भेद खुलने तक काफी सफर तय हो जाए। पिता ने तुरन्त कड़ा कि इस कार्य के लिए उनका सीस हाजिर है। बेटे ने पिता का सुझाव खुशी के साथ परवान किया और सीस काट कर चांदनी चौक में गुरू जी के सीस के स्थान पर रख दिया और चलती आँधी में, भाई ननूआ और भाई अड्डा जी के साथ गुरू जी का सीस लेकर, आनन्दपुर साहिब की ओर चल पड़ा। रास्ते में पाँच पड़ाव किए—बागपत, तराउड़ी (करनाल), अनाज नण्डी (अंबाला), नाभा साहिब (चंडीगढ़ के नजदीक) और कीरतपुर साहिब।

कीरतपुर से भाई अड्डा जी खबर देने के लिए आनन्दपुर गए। दशमेश जी ने आनन्दपुर ही संस्कार करने का फैसला किया और माता नानकी जी, गुजरी जी और संगतों सहित, कीरतपुर पहुँचे। माता गुजरी जी ने सीस को माथा टेका और वचन किए “आप की निभ गई मेरी भी निभ जाए।” शब्द प्रकृति हुई संगतों सीस को आनन्दपुर ले आई। गुलाब जल के साथ स्नान करवाकर चन्दन की चिता बनाकर संस्कार किया गया। दशमेश जी ने संगतों को सम्बोधन किया : “डोलने की जरूरत नहीं, महापुरुष अपनी कुर्बानी देकर ही लोगों को भक्ति मार्ग पर लाने और अकाल पुरुष के साथ मिलने की युक्ति बताते हैं, गुरू तेग बहादुर साहिब जी अपना बलिदान देकर संसार को, सिर ऊँचा करके जीने और धर्म की खातिर मरने की युक्ति सिखा गए हैं।”

जब गुरू जी को भाई जैते की योजना, दलेरी बहादुरी का

पता लगा तो कस कर आलिंगनबद्ध कर लिया और वर बख्शा
“रंगरेटे गुरू के बेटे।”

गुरू साहिब की शहीदी होते ही जोरदार आँधी चल पड़ी। इस समय लालकिले में राशन पहुँचाने गए भाई लक्खी शाह की बैलगाड़ी बाहर निकलकर चांदनी चौक की तरफ दौड़ पड़ी। आँधी और बैलगाड़ियों की धूल से बचने के लिए सरकारी पहरेदार पीछे हट गए। इस आँधी और तूफान का लाभ उठा कर भाई लक्खी शाह, उसके पुत्र निगाहीया, भाई ऊदा और भाई गुरदित्त ने गुरू जी का पावन शरीर एक रूई वाली बैलगाड़ी में रख लिया और रूई में छिपा लिया। अपने गांव रायसीना में घर पहुँच कर, भाई लक्खी शाह ने चिता तैयार की और घर को सब सामान सहित आग लगाकर पावन देह का संस्कार करके शुक्र मनाया। पवित्र अस्थियां गागर में डालकर वहाँ ही दबा दी (इस स्थान पर अब गुरूद्वारा रकाबगंज सुशोभित है।)

22. गुरू जी की अजमत :- यहाँ पर गुरू जी की शान और अजमत के बारे में एक बात वर्णन करने योग्य है, अगर गुरू जी नाम-बाणी और तपस्या में लीन हैं तो वे अत्यंत त्यागी और वैरागी हैं और इस तरह की वैराग्यमयी बाणी का रचना कर रहे हैं :-

चेतना है तउ चेल लै निति दिनि मै प्रानी ॥

छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥१॥ रहाउ॥

हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना ॥

झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥१॥

अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥

कछु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥२॥१॥

अंग : ७२६

और

जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ ॥
 जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ ॥१॥ रहाउ ॥
 मात पिता सुत बंध जन हितु जा सिउ कीना ॥
 जीउ छूटिओ जब देह ते डारि अगनि मै दीना ॥१॥
 जीवत लउ बिउहारु है जग कउ तुम जानउ ॥
 नानक हरि गुन गाइ लै सभ सुफन समानउ ॥१॥२॥

अंग : ७२६-७२७

और गुरु नामजद होने पर भी बाबा बकाला में एक साधारण से घर में छिप कर बैठे हैं और पाखंडियों की ओर से गुरु बन बैठने पर भी प्रकट नहीं होना चाहते, पर अगर संगतों की प्रार्थना करने पर गुरु बन कर प्रकट हो जाते हैं तो फिर आराम के साथ नहीं बैठते। लोक भलाई के कार्य भी करते हैं और कट्टर औरंगजेब के ज़ालिम राज्य में प्रभावित जनता को दलेरी और निर्भयता के साथ गुरु नानक साहिब की शिक्षा भी दृढ़ करवाते हैं कि जीना तो इज्जत के साथ ही चाहिए।

जे जीवै पति लथी जाइ ॥ सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥

अंग : १४२

इसके साथ-साथ भै काहू काऊ देत नहि नहि भै मानतु आनि ।। वाला आदर्श भी समझाते हैं और अन्त में इन्हीं आदर्शों की पूर्ति के लिए दिल्ली में जाकर अपना बलिदान तक भी दे देते हैं।
23. शहादत की विलक्षणता :- इससे ठीक 69 वर्ष पहले शहीदों के सरताज, श्री गुरु अर्जुन देव जी की शहादत हुई थी। वह शहादत अत्यधिक महान थी जो अपने धर्म, ग्रंथ और संगत के लिए दी गई थी। लेकिन गुरु तेग बहादुर जी की शहादत, दुनिया के इतिहास में एक बेमिसाल घटना है। अपने धर्म के लिए जान कुर्बान कर देना बहुत महान है पर दूसरों के धर्म के लिए, जिनके रीति-रिवाजों को आप मानते भी नहीं थे, शहादत दे देनी विशेष

रूप से महान है। दूसरी विलक्षण बात यह है कि अभी तक संसार में जितनी शहादतें हुई हैं कातिल ही पहले मकतूल के पास जाता रहा है, पर गुरु तेग बहादुर साहिब पहले कश्मीरी पंडितों को कहते हैं कि वह जाकर औरंगजेब तक ये बात पहुँचा दे, “अगर गुरु तेग बहादुर इस्लाम धारण कर लें तो हम अपने-आप ही मुसलमान बन जाएंगे।” फिर आप चल कर आगरे में जाकर गिरफ्तारी देते हैं। जब दिल्ली के सिक्खों ने रूपए चुकाकर छुड़वाने की बात की तो आपने फरमाया, “यह गिरफ्तारी मैंने स्वयं दी है।” गुरु साहिब ही पहले शहीद हैं जिनके सीस का किसी ओर स्थान और धड़ का किसी ओर स्थान पर संस्कार हुआ। ‘बाबे के’ और बाबर किया की टक्कर अंतिम समय तक लगी रही। अगर जहांगीर ने गुरु अर्जुन देव जी को शहीद करवाया तो जहांगीर के पोते औरंगजेब के साथ गुरु अर्जुन देव जी के पोते गुरु तेग बहादुर जी ने टक्कर ली। यह टक्कर तब तक जारी रही जब तक मुगल राज्य तहस-नहस न हो गया। क्योंकि यह जालिम और झूठ-फरेब के राज्य के साथ सच, धर्म और इन्साफ की टक्कर थी।

24. शहादत के कारण :-

- (i) शहादत का बड़ा कारण यह था कि औरंगजेब सिक्ख जत्थेबन्दी को मुगल राज्य के लिए बहुत खतरनाक समझता था। गुरु नानक साहिब जी का घर आरम्भ से ही सरबत का भला, नम्रता, सखावत (गुरु का लंगर चालू रखना), आदि का अलमबरदार था। इस कारण सरकार से बागी यहाँ पर आकर शरण लेते थे। इस बात से भी औरंगजेब दुःखी था।
- (ii) दूसरे, गुरु जी के दलेरी से भरे प्रचार से भी हुकूमत भयभीत और नाराज़ हो गई थी।
- (iii) नज़दीकी रिश्तेदार प्रिथीचंद, धीर मल्ल और रामराय, काफी समय से गुरु घर के विरोधी चले आ रहे थे। धीरमल्ल और

रामराय कट्टर विरोधी थे। राम राय की तो औरंगजेब तक पहुँच भी थी; वह बादशाह के कान भरता रहता था।

- (iv) सबसे बड़ा कारण औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीति थी, जिससे तंग आकर लोग चिल्ला रहे थे। जनता की पुकार सुनकर गुरु जी ने एक यही हल सोचा कि शहादत देनी ही समय की जरूरत है। इसके बिना अत्याचारों पर रोक लगाना संभव नहीं होगा।

25. शहादत के प्रभाव :-

- (i) गुस्से और रोष ने मुजुम्मत (विरोधी और विद्रोह) का जज्बा पैदा कर दिया। लोग गुरुघर को अपना मुक्ति-दाता समझने लग पड़े, गुरु गोबिन्द सिंह जी के इर्द-गिर्द लामबंद होने आरम्भ हो गए, जिन्होंने जुल्म से टक्कर लेने के लिए प्राण न्योछावर करने को तैयार और शास्त्रबद्ध योद्धाओं की सेना तैयार कर ली। दूसरे शब्दों में, दशमेश जी के नेतृत्व में सिक्ख कौम तेजी के साथ जत्थेबंद हो गयी।
- (ii) खालसा पंथ का जन्म इस शहादत का ही परिणाम है।
- (iii) जुर्रत और दलेरी को इस शहादत ने ही जन्म दिया। जिस दिल्ली में से नवम्बर, 1675 ई. में एक सिक्ख न निकल सका जो गुरु जी के सीस और धड़ को उठा सके, उसी दिल्ली में से एक साल बाद (अक्तूबर, 1676) एक सिक्ख ने जामा मस्जिद में से निकलते औरंगजेब को दो ईंटें मारी। एक दिन जब औरंगजेब की सवारी चाँदनी चौक में से निकल रही थी तो एक सिक्ख ने दूर से डंडा दे मारा। और, दो दिन बाद जब वह घोड़े पर सवार होकर जा रहा था तो एक ने तलवार के साथ आक्रमण किया। अंग रक्षक उस हमलावर को मारने ही लगे थे कि बादशाह ने उनको रोक दिया। उसने सोचा कि जिस आग को वह दबा रहा था, वह अब बलिक भड़क उठी

थी। बादशाह रात को हड़बड़ा के उठता था। आखिर, इस बात से डरता कि कोई उसको मार ही न दे, दिसम्बर 1676 ई. को दिल्ली छोड़कर दक्षिण की ओर चला गया और उसी तरफ ही * 21 फरवरी, 1707 ई. को औरंगाबाद के नज़दीक उसकी मृत्यु हो गई।

26. ज्ञानहीन और शरारत भरा प्रचार :-

विचित्र नाटक, गुरु शोभा पुस्तक, भट्ट वहीयां आदि के होते हुए किसी अन्य स्रोत की आवश्यकता नहीं रह जाती, यह साबित करने के लिए कि कश्मीरी ब्राह्मण श्री अगरनाथ की यात्रा से सीधे गुरु तेग बहादुर जी के पास आनन्दपुर साहिब में आए थे। गुरु जी ने उनके ऊपर औरंगजेब की सरकार की ओर से नष्ट किए जा रहे जबर और जुल्म के बारे में सुनकर, उनको कह दिया था कि सरकार के कानों में यह बात डाल दो कि गुरु तेग बहादुर हमारे मार्गदर्शक हैं, अगर वह इस्लाम कबूल कर लें तो हम अपने आप उनके पीछे आ जाएंगे।

एक तरफ तो एक महापुरूष इतनी बड़ी कुर्बानी देता है, दूसरी तरफ, कुछ सच्चाई से नावाक़िफ़ या शरारती, सिक्ख विरोधी तथाकथित विद्वान, गुरु जी को 'बागी' और 'घाड़वी' के रूप में प्रस्तुत करते हैं। जैसे, सियारउल-मुताखरीन का लेखक, गुलाम हुसैन, जो गुरु जी की शहादत के 106 वर्ष बाद सुन सुनाकर लिखता है कि गुरु जी के पवित्र शरीर के टुकड़े करके दीवारों पर लटकाए गए थे, जो सरासर झूठ है। शरारती तत्व ही गुरु जी को लुटेरे के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वह भूल जाते हैं कि गुरु जी को दसवंद की राशि सिक्ख खुशी के साथ भेंट करते थे या मसन्दों के जरिए भेजते थे। इसकी गवाही दंबेस्तान-ए-मजाहेब के लेखक, मोहसिन फानी देते हैं कि राजस्व संग्रह में परेशानी होती थी, पर दसवंद सिक्ख खुश होकर गुरु की गुल्लक में डालते थे; मसन्द

भी, दूर-दूर के सिक्खों के पास से दसवंद लेकर भेजते थे। यह भद्रपुरुष भूल जाते हैं कि-

- (i) गुरु तेग बहादुर उस गुरु नानक पातशाह की गद्दी पर विराजमान थे, जिन्होंने अपनी सारी जिन्दगी, जोखिम से भरी पदयात्रा करके दुःखी मानवता की सेवा में लगा दी थी और जो हक, सच, प्यार, त्याग, कुर्बानी, मानवीय समानता और भाईचारा, आदि के अलमबरदार और क्रांतिकारी रहबर थे।
- (ii) इस गुरुगद्दी के लिए श्री हरकृष्ण जी ही उनको (गुरु तेग बहादुर जी) को नामजद कर गए थे। वह कोई अपने-आप गुरु नहीं बने थे। वह तो नामजद हो जाने के बाद भी भजन सिमरन में ही लीन थे। गुरुगद्दी की बड़ी जिम्मेदारी उन्होंने संगत की प्रार्थना पर ही परवान की थी।

पर जब जिम्मेदारी उठा ली तो फिर आराम से नहीं बैठे। हुकूमत के विरुद्ध प्रचार करने के, वह जरूर दोषी थे क्योंकि वह जनता को प्रेरित करते थे, "जुल्म करना ही पाप नहीं, जुल्म सहना भी पाप है; न किसी से डरो, न किसी को डराओ; इज्जत के बिना जीना कोई जीना नहीं है, इत्यादि।"

- (iii) गुरु तेग बहादुर जी द्वारा रची हुई बाणी उनकी शख्सियत की मुँह बोलती तस्वीर है।

- (iv) कश्मीरी पंडितों की नजर में, सारे देश में, गुरु जी ही ऐसे महापुरुष थे जो उनका संकट हरण कर सकते थे और, उनका अनुमान इतना ठीक साबित हुआ कि गुरु जी ने उनका सारा संकट अपने सिर पर ले लिया और अंत में दिल्ली में जाकर अपना बलिदान दे दिया। यह दुनिया के इतिहास में पहली बार हुआ है कि कोई महापुरुष किसी दूसरे धर्म की खातिर अपनी कुर्बानी दे और वह भी कातिल के पास स्वयं चलकर जाए।

- (v) इस बलिदान के बारे में सबसे प्रमुख और अकाट्य गवाही

गुरु गोबिन्द सिंह जी की अपनी है। वह अपनी जीवन कथा लिखने से पहले लिखते हैं गुरु हरकृष्ण से तेग बहादुर बने। उन्होंने तिलक जनेऊ की रक्षा की। कलियुग में यह एक ऐसी अद्वितीय घटना है जिसका कोई अपवाद नहीं। भले पुरुषों को बचाने के लिए उन्होंने शहादत प्राप्त की, पर जरा भी अफसोस न किया। धर्म को बचाने के लिए उन्होंने सब कुछ त्याग दिया। सीस दे दिया परन्तु धर्म की शान कम न होने दी। नाटक चेटक जो चमत्कारों के नाम पर दिखाए जाते हैं, उनका सहारा न लिया क्योंकि वह कहते हैं कि परमात्मा के लोगों को ऐसा करते हुए लज्जा आती है :-

हरी कृष्ण तिन के सुत ब्ये ॥ तिन ते तेग बहादुर भये ॥१२॥
 तिलक जजजू राखा प्रभ ता वा ॥ कीनो बडो कलू महि साका ॥
 साधन हेति इति जिनि करी ॥ सीसु दीया पर सीन उच्चरी ॥१३॥
 धरम हेति साका जिनि कीया ॥ सीसु दीया पर सिरु न दीया ॥
 नाटक चेटक कीये कुकाजा ॥ प्रभ लोगन कह आवत लाजा ॥१४॥

दसवें पातशाह आगे फरमाते हैं कि गुरु तेग बहादुर जी ने अपना शरीर रूपी ठीकरा दिल्ली के बादशाह के सिर पर जाकर फोड़ा और आप ज्योति-ज्योत समा गए। गुरु तेग बहादुर जी के जैसा कारनामा किसी ने नहीं किया और न ही कोई कर सकेगा। दूसरे धर्म की रक्षा के लिए कोई जान नहीं दे सकता। हर तरफ है ! है ! हुई (हाय हाथ नहीं) और सचखंड में जय-जय के जयकारे लगाए गए।

दोहा-

ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि प्रभ पुर कीया पयान ॥
 तेग बहादुर सी क्रिया करीन किनहू आन ॥१५॥
 तेग बहादुर के चलत भयो जगत को सोक ॥
 है है है सब जग भयो जै जै जै सुर लोक ॥१६॥

दसवें पातशाह ने गुरु अर्जुन देव जी की शहादत का कोई वर्णन नहीं किया। गुरु अर्जुन देव जी, जिनको 'शहीदों के सरताज' कहा जाता है, की शहादत अति महान है पर है वह पंथ, ग्रंथ, संगत, पंगत की पवित्रता या उन आदर्शों के लिए है जिनका सिक्ख धर्म के साथ संबंध है। गुरु तेग बहादुर जी की शहादत हिन्दू धर्म और तिलक, जनेऊ के लिए है। वह जनेऊ डालते नहीं, तिलक लगाते नहीं और न ही इनमें विश्वास रखते हैं। इसलिए गुरु तेग बहादुर जी का बलिदान ऐसा है जिसको 'करी न किन्हूँ आन' कहा जाता है और कहना बनता भी है। इस तरह का बलिदान न अभी तक किसी ने दिया है और न ही कोई दे सकेगा।

27. गुरु जी के सम्पूर्ण जीवन पर एक दृष्टि :- श्री गुरु तेग बहादुर, छोटे पातशाह श्री गुरु हरगोबिन्द जी और माता नानकी जी के सुपुत्र, अपने छः बहन, भाईयों में सबसे छोटे थे। वह स्वभाव के इतने नर्म और दर्दमंद थे कि 4 साल की आयु में अपने बड़े भाई, बाबा गुरदित्त जी की बारात जाने के समय, जब एक हनउम्र के बच्चे को नंगे देखा तो अपने वस्त्र, कंगन, कैंठे समेत, उतार कर उसको दे दिए और आप नंगे बदन माता जी के पास पहुँच गए। और, जब सारे देश को नंगा किया जाने लगा तो आप जी ने शरीर रूपी चादर डाल कर इसको नंगे होने से बचा लिया कवि सेनापति के अनुसार :

प्रगट भये गुरु तेग बहादुर, सगल सृष्टि पै ढापी चादर।

बतौर पुत्र इतने आज्ञाकारी थे कि हर वक्त गुरु पिता के सामने होकर बैठते और जब भी गुरु जी को इशारा करते तो तुरन्त आज्ञा का पालन करते। जब गुरु पिता ने गुरुगद्दी अपने पोते, गुरु हरराय जी, को बख्शी और माता नानकी जी को एक कटार, एक रूमाल, और एक गुटका साहिब देकर आज्ञा की कि वह गुजरी जी और तेग बहादुर जी को साथ लेकर बकाले चले

जाएँ तब आप जी ने सत्य वचन कह कर गुरु हर राय जी को माथा टेका। यह अलग बात है कि माता नानकी जी ने जब कहा, "आप जी तो तेग बहादुर को गुरु नानक की गद्दी वारिस कहते थे," तब छोटे पातशाह ने जवाब में कहा, "वह समय भी आएगा। पर, क्योंकि तेग बहादुर ने एक महान कार्य करना है जिसके लिए लम्बी तैयारी और तपस्या की जरूरत है।" इसके अलावा जब गुरु हरराय जी ने अपने सवा-पाँच साल के छोटे सुपुत्र हरकृष्ण जी को अपने स्थान पर नामांकित किया तब भी आप जी ने कोई किन्तु परन्तु नहीं किया।

बतौर पति इतने संवेदनशील थे कि जब माता गुजरी जी, मामा कृपाल जी, भाई दयाल दास जी, आदि सिक्खों को पटना छोड़कर असम, ढाका, आदि की ओर जाने लगे तो सबको माता जी का योग्य ध्यान रखने के लिए वचन किए और बाद में हुक्मनामों में भी यह बात दोहराते रहे।

बतौर पिता इतने जिम्मेदार थे कि गोबिन्द राय जी को हर तरह की शिक्षा देने की योग्य कोशिश की जिसकी प्रौढ़ता गुरु गोबिन्द सिंह जी ने विचित्र नाटक में यह लिखकर की है :-

कीनि आनिक भांति तन रच्छा ॥

दीनी भांति भांति की सिच्छा ॥...

पंडित कृपा राम के नेतृत्व में 16 पंडितों का प्रतिनिधिमंडल आनन्दपुर साहिब में गुरु जी को मिला और हुक्मत के जुल्मों की दर्द भरी व्यथा सुनाई और कहा कि सारे देश में एक आप जी ही ऐसे महापुरुष हैं जो हमारी बाजू पकड़ सकते हो। कृपा करके इस संकट में से हमें बचाओ। गोबिन्द राय जी ने भी 'पिता गुरु तुम करो सहाइ' कहकर हामी भर दी तब गुरु जी ने वजद में आकर कहा, 'बांह जिनां पकड़िए शिर दीजे बांह न छोड़िए'। और समय आने पर अपना बलिदान दे दिया। यह गुरु जी की ओर से दिये वचन पालने की इंतहा थी।

मित्र भी ऐसे थे कि हमें मित्र बनाकर रखने का तरीका सीखा गए। नवाब सैफ खान उनके मित्र थे और जहां भी गए मित्र को याद रखा और अगर कोई मन पसन्द चीज को देखते तो खरीद कर उसको भेज देते। सैफ खान ने, औरंगजेब के स्वभाव को जानते हुए भी, गुरु जी को 4 महीने अपने पास रखा और शहादत के बाद भी 40 दिन शोक का लिबास पहनकर रखा। इसके इलावा, चाहे भाई दयाला उनके अनन्य सिक्ख थे पर गुरु जी उनको इतना सत्कार देते थे कि हुक्मनामों में भी लिखते, “भाई दयाला जी का कहना गुरु का वचन जानना। उनको दी कार भेंट गुरु को पहुँची जानना ...”।

दूरदर्शी इतने कि आनन्दपुर बसाने वाली जगह का चुनाव करते समय एक ख्याल रखा कि इस स्थान पर बसा शहर रक्षा की तरफ से सुरक्षित हो। जिस तरह उन्होंने आनन्दपुर साहिब का भूमि उपयोग का नक्शा तैयार किया वह एक सुघड़ नगर योजनाकार वाले सारे गुण प्रकट करता है। संतोषी इतने थे कि जो सामान धीरमल्ल की ओर से गुरुघर से लूटा गया था, जब उसको मक्खन शाह लुभाणा जी के आदमियों ने वापिस किया तब गुरु जी ने वापिस धीरमल्ल को ही देने के वचन कर दिए। धीरजवान इतने कि जब शीहां मसन्द की ओर से लगी गोली के साथ माथे से खून बह रहा था तो ‘भले धीरमल्ल, भले...ही कहते रहे। जब माता नानकी जी और मक्खन शाह लुभाणा जी ने धीरमल्ल, शीहे मसन्द और साथियों को सुधारने का सुझाव दिया तो गुरु जी ने कहा, “यह पहले ही तृष्णा की आग में सड़ रहे हैं। इनको माफ कर देना ही बड़ा धर्म है”।

गुरु जी इतने त्यागी थे कि गुरुगद्दी की रस्म पूरी होने पर भी अपनी भजन बंदगी और नित्य प्रति जिंदगी में मगन थे पर जब मोहतबर सिक्खों और माता जी ने कहा कि संगतों को योग्य नेतृत्व

की जरूरत है तो आप जी ने जिम्मेदारी संभाल ली। दीवाली बाबा बकाला ही करके श्री अमृतसर और अन्य गुरुघरों के दर्शनों के लिए और सिक्ख धर्म के प्रचार के लिए चल पड़े। मालवा जितना पहले उपेक्षित रहा था, गुरु तेग बहादुर जी ने उतनी ही अधिक इस इलाके की यात्रा की।

मालवा के इलावा, गुरु जी ने उत्तर-पूर्वी इलाकों की यात्रा आरम्भ की और पटना से आगे असम और फिर ढाका और अन्य दूर-दराज स्थानों पर सिक्खी का प्रचार किया। गुरु नानक साहिब जी के बाद आप जी हैं जिन्होंने इतनी यात्रा की है। एक अनुमान के अनुसार उन्होंने लगभग 5000 मील की यात्रा की थी।

गुरु गोबिन्द सिंह जी के द्वारा प्राप्त जानकारी से भाई नन्द लाल जी लिखते हैं कि श्री गुरु नानक देव जी की नौवीं ज्योति सच के पालनहारों की सरदार है, लोक परलोक की सुल्तान और आत्म-विश्वास की शिखर है।

यही कारण है कि कश्मीरी पंडितों के आने से पहले ही गुरु तेग बहादुर जी बड़ी गंभीरता के साथ सोच कर मन बनाकर बैठे थे कि औरंगजेब के जुल्मों को रोकने के लिए कुर्बानी देनी ही पड़ेगी। इसी उद्देश्य के लिए उन्होंने आगरा जाकर अपनी गिरफ्तारी दी और दिल्ली पहुँच कर कुर्बानी की। इसका विस्तार हम पहले ही लिख आए हैं। अंतिम समय अपना धर्म बदल मुसलमान बनने से साफ इंकार कर दिया और करामात दिखाने को 'कहर' कहकर ठुकरा दिया और तीसरी शर्त के अनुसार 'मरने के लिए हम तैयार हैं' कह दिया। उनकी अंतिम इच्छानुसार, ऐतिहासिक कुएँ से गुरु जी ने स्नान करके जपुजी साहिब का पाठ करना आरम्भ किया। जैसे उन्होंने जल्लाद को कह रखा था, "पाठ की समाप्ति पर जब मैं धन वाहिगुरु कहकर सीस झुकाऊँगा, आप अपना काम कर लेना"। इस तरह उनका सिर धड़ से अलग कर दिया गया।

यहाँ बताना उचित होगा कि उस धर्म (तिलक, जनेऊ) की खातिर जान कुर्बान करना जिसमें गुरु जी कोई विश्वास नहीं रखते थे, न वह तिलक लगाते थे, न जनेऊ पहनते थे और वह भी कातिल के पास चलकर स्वयं गिरफ्तारी देना, एक ऐसा कारनामा है जो अभी तक किसी ने नहीं किया और न ही कोई कर सकेगा। तब ही तो गुरु गोबिन्द सिंह जी ने लिखा है :-

तिलक जंजू राखा प्रभ ताका ॥ कीनो बडो कल महि साका ॥
 साधन हेति इति जिनि करी ॥ सीसु दीया पर सी न उचरी ॥१३॥
 धर्म हेति साका जिनि कीया ॥ सीसु दीया पर सिररू न दीया ॥
 नाटक चेटक कीये कुफाजा ॥ प्रभ लोगन कह आवत लाजा ॥१४॥

कितने इत्तफाक की बात है कि जिस स्थान से संसार भर ने लोकतंत्र (Democracy) पर चलने का तरीका सीखा, उस हाऊस ऑफ काननज़, इंगलैंड के मुख्य द्वार पर लिखा है :- 'मैं आपको मत के साथ सहमत नहीं पर जान वार कर भी आपको अपना मत कहने की इजाजत ले दूंगा', मुख्य द्वार पर लिखे यह विचार गुरु जी के विचारों की कितनी तर्जुमानी करते हैं।

आप केवल शहीदों के सरताज गुरु अर्जुन देव जी के पोते ही नहीं थे बल्कि आप जी ने गुरु नानक देव जी के सिक्खी के पौधे को इतना खून देकर सींचा कि आप जी की पत्नी, पुत्र, चारो पोते, बहन वीरो के पाँचों पुत्र और अनेकों निकटवर्ती सिक्खों ने शहीदियाँ प्राप्त की।

आप जी के सुपुत्र, श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने, अमृत संचार करके ऐसा खालसा पंथ (संत सिपाहियों की कौम) सृजन किया कि सिंह जुलम के विरुद्ध जान कुर्बान कर देनी एक मामूली बात समझते थे।

28. शहादत के प्रति इतिहासकारों के विचार :-

- (i) इंदू भूषण बैनरजी लिखते हैं, "इस शहादत ने ही सिक्ख कौम की पूर्णता के लिए रास्ता बनाया।"
- (ii) डॉ. नुहम्मद लतीफ लिखते हैं, "इस शहादत ने मजबूर कर दिया कि सिक्ख कौम पूर्ण तौर पर शस्त्रबद्ध हो।"
- (iii) डॉ. गोकल चन्द नारंग लिखते हैं, "गुरु जी की शहादत को खास करके हिन्दुओं ने अपने धर्म के लिए भी जाना। सारे पंजाब में गुस्से और रोष की ज्वाला भड़क उठी।"
- (iv) जे. डी. कनिंघम लिखते हैं, "(गुरु) गोबिन्द (सिंह) ने पिता की शहादत के कारणों को समझा, औरंगजेब की कट्टर धार्मिक पालिसी को देखा; तजुर्बे, समझदारी और विद्या ने उन पर प्रकट कर दिया कि वह अपने हमवतनों को दुबारा नये सिरे से उठाएं और (गुरु) नानक के मोटे उसूलों को निर्णयजनक शक्ति दें।"
- (v) एम. ए. मैकालिफ लिखते हैं, "इस शहादत की तुलना दुनिया की किसी घटना के साथ नहीं की जा सकती। यह अपने आप में एक अलग, अनोखी और अलौकिक घटना है।"
- (vi) लालत दौलत राय लिखते हैं, "हम उल्टी गंगा बहाने की लोकोक्ति को सुनते आ रहे थे पर अर्थ गुरु तेग बहादुर जी ने समझाए। आज तक यह तो हुआ है कि कातिल मकतूल के पास जाए, यह नहीं हुआ कि मकतूल कातिल के पास आए। ऐसा करके गुरु तेग बहादुर जी ने उल्टी गंगा बहा दी।"
- (vii) कवि सेनापति लिखते हैं, "गुरु तेग बहादुर जी ने सारे संसार की इज्जत शरीर रूपी चादर डाल कर ढकी। खत्म हो रहे कर्म और धर्म की इज्जत उन्होंने रखी। कलियुग में ऐसा कारनामा किया जो सदा याद रहेगा। सारे संसार में उनकी उपमा हुई। सबके धर्म बच गए। विशेष करके तिलक, जनेऊ और मंदिरों को नष्ट होने से बचा लिया।"

29. सहायक संदर्भ पुस्तकों की सूची :-

1. श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी : विचित्र नाटक ।
2. काहन सिंह नाभा : महान कोष
3. Max Arthur Macauliff : The Sikh Religion
4. Joseph Davey Cunningham : History of the Sikhs
5. करतार सिंह : सिक्ख इतिहास ।
6. सतबीर सिंह : इति जिन करी ।
7. मुख्तार सिंह गुराया : दस पातशाहियाँ ।

30. सिक्ख धर्म के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी

क) मूल मंत्र

वाहिगुरु, परमात्मा, खुदा के बारे में चित्र गुरु जी ने मूल मंत्र में चित्रित किया है। दूसरे शब्दों में मूल मंत्र वाहिगुरु की संक्षेप परन्तु, सम्पूर्ण व्याख्या है :-

एक ओंकार : वाहिगुरु एक है, सबमें सर्वव्यापक है।

सतनाम : वह सदा रहना वाला है और सभी गुणों का समूह है।

करता पुरखु : वह सृजनकर्ता है और सभी शक्तियों का प्रतीक है।

निरभउ : वह निर्भय और हर मर्यादा से आजाद है।

निरवैरु : वह किसी के साथ वैर नहीं रखता, मेहरबान है।

अकाल मूरति : वह समय के बंधन में नहीं (काल रहित) है, उसकी ज्योति का प्रकाश हर किसी में है।

अजूनी : वह जन्म-मरण से रहित है

तैभं : उसका प्रकाश अपने आप, स्वतः सिद्ध है।

गुरु प्रसादि : उत्तकी सगद्व और प्राप्ति गुरु की कृपा से ही होती है।

(ख) नितनेम की बाणियाँ

प्रातः : जपुजी साहिब, जाप साहिब, सदैये साहिब, चौपाई साहिब, आनन्द साहिब।

सायं : रहारास

रात्रि : कीर्तन सोहिला

नोट :-

1. कुछ लोग 'आसा की वार' का पाठ भी नियम के साथ रोज करते हैं।
2. कुछ लोग 'सुखमणी साहिब' का पाठ भी नियम के साथ रोज करते हैं।

(ग) पाँच प्यारे

1. भाई दया सिंह :- यह दया राम लाहौर (पंजाब) के रहने वाले क्षत्रिय थे।
2. भाई धर्म सिंह :- यह धर्म दास हस्तिनापुर (दिल्ली) के रहने वाले जाट थे।
3. भाई हिम्मत सिंह :- यह हिम्मतराय जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) के रहने वाले झीवर थे।
4. भाई मोहकम सिंह :- यह मोहकम चन्द द्वारका (गुजरात) के रहने वाले छीबे थे।
5. भाई साहिब सिंह :- यह साहिब चन्द बिदर (कर्नाटक) के रहने वाले नाई थे। इनका चुनाव और इनके द्वारा अमृत पान करने के साथ एक नए पंथ-खालसा पंथ (संत सिपाहियों की कौम) की सृजना हुई।

(घ) चार साहिबजादे :-

(श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के चार सुपुत्र)

1. साहिबजादा अजीत सिंह
2. साहिबजादा जुझार सिंह

इन दोनों ने गुरु पिता, श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी, की आँखों के सामने, पाँच प्यारों से पहले, चमकौर के युद्ध में शहीदियां प्राप्त की।

3. साहिबजादा जोरावर सिंह
4. साहिबजादा फतेह सिंह

इन दोनों ने सरहिन्द में शहीदियां प्राप्त की। यह मुश्किल के साथ 9 और 6 वर्षों के थे जब वज़ीर खान, सूबा सरहिन्द के हुकमों के साथ इनको पहले दीवार में चिनवाया गया और बाद में यातना देकर शहीद किया गया।

(इ) पाँच तख्त साहिबान

1. अकाल तख्त साहिब, अमृतसर, पंजाब।
2. तख्त पटना साहिब, पटना, बिहार।
3. तख्त केसगढ़ साहिब, आनन्दपुर साहिब, पंजाब।
4. तख्त हजूर साहिब, अबचल नगर, महाराष्ट्र।
5. तख्त दमदमा साहिब, तलवंडी साबो, पंजाब।

(च) पाँच ककार

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने खालसा पंथ का सृजन करते समय, अमृत पान करने के बाद, रहत-मर्यादा में पाँच ककार की रहत भी बताई :-

1. कछैरा :- जहाँ यह काम-काज का पहरावा है, वहाँ यह सदाचार और धार्मिक स्वतंत्रता का चिन्ह भी है।
2. कड़ा- कड़ा ऊँचे आदर्शों और दृढ़ता का चिन्ह है।
3. कृपाण - सिक्ख के हाथ में तलवार ही कृपाण बन जाती है। गाय, गरीब की रक्षा और अन्याय सह रहे लोगों की मदद के लिए प्रयोग की जाती है। यह स्वाभिमान और राजसी स्वतंत्रता का चिन्ह है। अधिकार और इंसानियत की रक्षा है।
4. कंधा - कंधा स्वच्छ और व्यवस्थित होने का चिन्ह है। बालों की देखभाल करता है।
5. केश - गुरु नानक देव जी से ही केश रखने की महत्ता चली आ रही है। उनकी तरफ से भाई मरदाना जी को दी गई शिक्षाओं में से एक शिक्षा यह भी थी कि सिर के केश नहीं कटवाने। केशों की खूबसूरती को एक आवश्यक अंग भी समझा जाता है। घर-बार छोड़ने के समय सिर, दाढ़ी मुँड़वाने की प्राचीन परम्परा के विपरीत केश गृहस्थ जीवन की सम्पूर्णता के प्रतीक हैं।

(छ) सिक्ख धर्म में करने योग्य बातें

1. बालों की देखभाल करनी।
2. अपने जीवन साथी के साथ वफादारी रखनी।
3. गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु मानना और उसकी शिक्षाओं पर अमल करना।
4. अमृत छकना और रहत मर्यादा का पालन करना।
5. प्रातः उठकर स्नान करना, नितनेम करना और कुछ समय संगत में बैठना।
6. हर समय उसकी याद, प्यार और डर में रहना।
7. नेक कमाई करनी और जरूरतमंदों की मदद करनी।
8. देग चलानी (देग: उदारता और खुशहाली का चिन्ह और बाँट कर छकने का प्रतीक है)
9. तेग चलाना (तेग : ताकत और अधिकार इन्साफ का चिन्ह और गाय, गरीब की रक्षा और अन्याय सह रहे लोगों की मदद का प्रतीक है)
10. सच बोलना और पवित्र जीवन यापन करना।
11. धर्म, जाति, रंग, नस्ल, रूतबे और लिंग के भेद के बिना दुःखी मानवता के साथ प्यार और उसकी सेवा करनी।
12. एक अकाल पुरख में विश्वास रखना।
13. सब के बराबर के अधिकारों का आदर करना, सती-प्रथा का विरोध करना और विधवाओं के पुनः विवाह को उत्साहित करना।
14. अच्छे गुण जैसे सच्चाई, ईमानदारी, सहनशीलता, निष्पक्षता, ईसाफ, परोपकार, कृतज्ञता, वफादारी और अन्य सभी नैतिक और पारिवारिक गुणों को ग्रहण करना।
15. चढ़ती कला में रहना, हुक्म मानना और सरबत का भला मांगना।
16. बाणी पढ़नी, पढ़ानी, विचारनी और इस पर अमल करना।

(ज) सिक्ख धर्म में न करने योग्य बातें

1. बालों की बेअदबी करनी।
2. शराब, सिगरेट, तम्बाकू या अन्य नशों का प्रयोग करना।
3. अपने जीवन साथी के बगैर किसी अन्य के साथ शारीरिक संबंध बनाना।
4. हलाल खाना।
5. काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, झगड़ा, ईर्ष्या, चुगली, निन्दा, खुशामद करना।
6. भ्रूण हत्या और गर्भपात करने।
7. श्मशान और कब्रों की पूजा करनी।
8. किसी देहधारी को गुरु मानना और डेरावाद को बढ़ावा देना।
9. सती प्रथा जारी रखना और विधवाओं के पुनः विवाह का विरोध करना।
10. औरतों को बंदी बनाना, उनका शोषण करना।
11. मूर्ति पूजा करना।
12. दूर्इ, द्वैत, ढोंग, वहम-भ्रम और व्यर्थ कर्मकांड करना।
13. जाति-पाति भेदभाव और छूतछात करना।
14. अपने देश, कौम और समाज विरोधी कोई भी हरकत करना।
15. अधिक खाना, नींद लेना या बोलना।
16. श्राद्ध करना।

Details of Banks for sending Donation through Online/ Cheque/Draft may be sent in favour of: All India Pingalwara Charitable Society (Regd.), Amritsar' (PAN No.: AAATA 2237R) (The donations made to Pingalwara are exempt from Income Tax under Section 80G of I.T. Act. 1961)				
S.No.	Name of Account	Name of the Bank	Account No.	Swift/IFS Code
(FOR FOREIGN CONTRIBUTORS)				
	All India Pingalwara Charitable Society (Regd.), Amritsar.	State Bank of India Main Branch 11 Sansad Marg, New Delhi 110001	40102643733	SBININBB104
(FOR INLAND CONTRIBUTORS)				
1.	All India Pingalwara Charitable Society (Regd.), Amritsar.	Punjab National Bank Shariipura, Amritsar.	01562010033720	PUNB 0015610
2.	All India Pingalwara Charitable Society (Regd.), Amritsar.	State Bank of India, Town Hall, Amritsar.	10978255658	SBIN0000609
3.	All India Pingalwara Charitable Society (Regd.), Amritsar.	Bank of India, City Centre, Amritsar.	630510100026147	BKID0006305
4.	All India Pingalwara Charitable Society (Regd.), Amritsar.	Axis Bank Ltd., City Centre Amritsar.	685010100009799	UTIB0000685
5.	All India Pingalwara Charitable Society (Regd.), Amritsar.	Punjab National Bank, Hial Bazar, Amritsar.	0018002100097336	PUNB0001800
6.	All India Pingalwara Charitable Society (Regd.), Amritsar.	ICICI Bank Ltd., Lawrence Road, Amritsar.	006601012522	ICIC0000066
7.	All India Pingalwara Charitable Society (Regd.), Amritsar.	HDFC Bank Ltd., Mail Road, Amritsar.	01151000246510	HDFC0000115
8.	All India Pingalwara Charitable Society (Regd.), Amritsar.	HDFC Bank Ltd., Ghanta Ghar, Golden Temple, Amritsar.	13131000062013	HDFC0001313

9.	All India Pingalwara Charitable Society (Regd.), Amritsar.	Punjab & Sind Bank, Hall Bazar, Amritsar.	00011000095043	PSIB000A001	
10.	All India Pingalwara Charitable Society (Regd.), Amritsar.	Bank of Baroda, Town Hall, Amritsar.	01010100015572	BARBOAMR11S	
11.	All India Pingalwara Charitable Society (Regd.), Amritsar.	Punjab National Bank, Sec-47 C, Chandigarh.	12332011000560	PUNB 0123310	
12.	All India Pingalwara Charitable Society (Regd.), Amritsar.	Punjab & Sind Bank, Sangrur.	00671000012150	PSIB00000067	
13.	All India Pingalwara Charitable Society (Regd.), Amritsar.	State Bank of India, Patiala Gate, Sangrur.	33530846363	SBIN0001759	
14.	All India Pingalwara Charitable Society (Regd.), Amritsar.	Punjab & Sind Bank, Gole Market, New Delhi.	07621000007388	PSIB00000762	
Pingalwara Charitable Society UK (UK Charity No. 1178004) 756 Bath Road, Chisford, Hounslow, Middlesex TW5 9TY UK Ph. (+44) 203 439 4410 Email: info@pingalwara.org.uk Web: www.pingalwara.org.uk Bank: Punjab National Bank International Ltd. Account No. 1300594 Sort Code: 60 95 00 Swift Code: PUNBGB 22 IBAN No. GB54PUNB60910013000594		(IN CANADA) BIBI ABNASH KAUR KANG (Pingalwara Society of Ontario (Regd.)) 124 Blackmere Cir, Brampton, ONT, L6W 4C1, Canada Ph: 905-450-9664, 416-674-3341 Email: abnash6@yahoo.com		(IN USA) JASWANT SAWHNEY CHARITABLE TRUST In Association with All India Pingalwara Charitable Society (Regd.) 7713 Toburk CT, HANOVER, MD 21076-1643 U.S.A. BIBI JATINDER KAUR DUSAJ Ph. 410-551-8010 E-mail: kaurng 2004@yahoo.com	
S. GURBAKHSII SINGH 63 PEACOCK STREET, GRAVESEND, KENT, DA12 1EG U.K. (PH. 01474-508574)					

अपील

सेवक कउ सेवा बनि आई ,

हुकमु बूझि परम पदु पाई ,

गुरुद्वारा डेहरा साहिब लाहौर के रूखानी वांतावरण में और गुरबाणी की शिक्षाओं पर चलते हुए भगत पूर्ण सिंह जी ने जो लाहौर में निष्काम सेवा का कार्य आरम्भ किया था, उस कार्य को अमृतसर पहुँच कर मूल स्वरूप दिया। देश के विभाजन के बाद 18 अगस्त, 1947 को खालसा कॉलेज अमृतसर के रिफ्यूजी कैम्प में पहुँच कर भगत जी ने दीन-दुखियों की सेवा बड़ी लगन से आरम्भ कर दी जो कि उस समय हैजे के कारण एक अति जरूरी कार्य बन गया था। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। पिंगलवाड़ा को मूल रूप देने के लिए इसके संस्थापक भगत पूर्ण सिंह जी को दिन-रात सख्त मेहनत करनी पड़ी।

पिंगलवाड़ा में इस समय 1767 (31-10-2021) लाचार रोगी हैं जिनकी धर्म, जाति, वर्ग या रंग भेद के बिना सेवा-सम्भाल की जाती है। इनमें लाचार, अपाहिज, बीमार तथा पागल औरतें, मर्द, बच्चे और बूढ़े शामिल हैं। इनमें से कुछ भयानक असाध्य रोगों से ग्रस्त भी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त जन-चेतना के लिए बहुत-सा साहित्य पूर्ण प्रिंटिंग प्रेस में छापकर मुफ्त वितरण किया जाता है। गरीब बच्चों को मुफ्त विद्या, अपाहिजों को मुफ्त बनावटी अंग और वातावरण की सम्भाल और शुद्धता के लिए सरकारी तथा गैर-सरकारी जगहों में मुफ्त वृक्ष लगाए जाते हैं इत्यादि।

पिंगलवाड़े का प्रतिदिन का खर्च लगभग साढ़े छः लाख रुपये से भी अधिक है जो कि दानी सज्जनों और पिंगलवाड़े के शुभ-चिन्तकों द्वारा दिए दान और सहायता से चलता है। दानी सज्जनों से विनम्र प्रार्थना है कि वे संस्था को मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट और चैक द्वारा दान भेजने की कृपालता करें ताकि इस शुभ कार्य को जारी रखा जा सके।

निवेदिका:

डॉ. इन्द्रजीत कौर,

मुख्य सेवादार,



भगत पूर्ण सिंह के उपदेश

- प्रकृति के चरमों की रक्षा करो।
- सादा जीवन व्यतीत करो।
- अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर मानवता का भला करो।
- खादी का कपड़ा पहनकर बेरोजगारी को घटाने में सहायता करो।
- सादा खाना, सादा पहनना तथा सादगी में रहने का आनन्द ही कुछ और है।
- डीजल तथा पेट्रोल का कम से कम प्रयोग करो तथा बढ़ रही आबादी की रोक-थाम के लिए संयमगमयी जीवन व्यतीत करो।
- रो रही हवा, पानी तथा धरती की पुकार को सुनो।
- वृक्ष लगाना न भूलो, वृक्ष देश की खुशहाली के आधार हैं।
- बरसात की ऋतु में हरेक प्राणी कम से कम एक वृक्ष अवश्य लगाकर मानवता का भला करे।
- जानवरों की सुरक्षा के लिए मनुष्य को अपने अन्दर दयामयी भावना रखते हुए अधिक से अधिक यत्न करना चाहिए।

सावधान !

- कुदरती खेती का पासार,
किसान और उपभोक्ता का उद्धार
- रसायनिक खेती की देन:-
 - किसान करजाई,
 - खान-पान जहरीला और
 - जमीन बंजर।
- बी.टी. फसलें और सब्जियां जहरीली हैं। इनकी सेहत के लिए दूर-रस परिणाम बहुत भयानक होंगे और किसान, बीजों के लिए, हमेशा बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर सिर्फ निर्भर ही नहीं, उनका गुलाम भी हो जायेगा।



Ar. Mukhtar Singh Goraya

ABOUT THE AUTHOR

Born in 1936 C.E. the author, Ar. Mukhtar Singh Goraya attended a two-year course in Civil Engineering in the Government School of Engineering, Punjab, Nilokheri (Karnal) before attaining 7 years part-time Diploma in Architecture (G.D. Arch.—Maharashtra, equivalent to B.Arch) and Master's in City and Regional Planning (M.C.R.P.—G.N.D.U. Amritsar).

Having retired as Divisional Town Planner in 1994 C.E. from the Department of Town and Country Planning, Punjab, he has devoted himself to voluntary service in the All-India Pingalwara Charitable Society (Rugd.), Amritsar as its Hony. Secy. as well as Hony. Architect and Town Planner and is responsible for the planning, design and construction of all the new complexes and buildings constructed by the said society during the period beginning from 1995 C.E. onwards.

He has a keen interest in English and Punjabi Literature and Sikh Religion and History. He has written a book on 'Das Parshahian' in Punjabi as well as in English, which contains the maximum information in the minimum possible words. He also has the unique distinction to be the first to have written a well researched book on 'Avtar Bani' of 'Sant Nirankari Mandal'. He has also written brief biographies: (i) 'Amar Shahadé Baba Deep Singh Ji', (ii) 'Abraham Lincoln' (iii) 'Sachitar Sokhian on Guru Nanak Dev's Life, Travels & Teachings' (iv) 'Sankalp Jeevni Sri Guru Gobind Singh Ji'.